॥ ओ३म् ॥

मन की लहर

संग्रहकर्ता और लेखक :

श्री पण्डित रामप्रसाद "बिस्मिल"

प्रकाशक :

हरयाणा साहित्य संस्थान

गुरुकुल झज्जर, रोहतक

प्रथम बार ३०००

२०४१ विक्रम संवत् १९८४ ईस्वी

मूल्य ३-००

ओ३म्

विषय-सूची

ओ३म्

प्रकाशकीय

सन् १९२५ में जब मैं ईसाई स्कूल में पढता था, तभी से देश-स्वतन्त्रता हेतु क्रान्तिकारियों द्वारा किये जा रहे कार्यों की चर्चा सुनता रहता था। उसी समय इनके प्रति श्रद्धा के भाव उत्पन्न होगये थे। उन्हीं दिनों पं० रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा लिखित 'बोलशेविकों की करतूत' नामक पुस्तक पढी। पुनः 'काकोरी षड्यन्त्र' नामक पुस्तक में इनका आत्मचरित्र पढा। इससे देश को स्वाधीन करने की भावना दिन प्रतिदिन प्रबल होती चली गई। सरदार भगतसिंह आदि को जब फांसी दी गई, उसी समय अंग्रेजी राज्य से इतनी घृणा हो गई कि इनके कालिज में पढना पाप समझकर कालिज त्याग कर स्वतन्त्रता-आन्दोलन में क्रियात्मक रूप से भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। क्या किया और कैसे किया यह अलग ही कहानी है।

पं० रामप्रसाद बिस्मिल को फांसी हो जाने के पश्चात् आर्थिक दृष्टि से इनके परिवार की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गई थी। अंग्रेजी राज्य में तो इन्होंने सदा कष्ट ही भोगे। हमने सोचा था स्वाधीन भारत में ऐसे परिवारों को विशेषकर सम्मानित किया जायेगा। किन्तु जिनके खून से यह आजादी का वृक्ष सींचा गया था, उनको जड़ की भांति नीचे छुपा दिया गया। मैंने बिस्मिल जी की बहन के पास जाकर सारी स्थिति देखी। मुझे रोना आया कि बलिदानी वीर की बहन कितने घोर कष्ट में जीवन यापन कर रही है। तभी से मैं आर्थिक दृष्टि से इनकी सहायता करने लगा। गुरुकुल झज्जर के उत्सव पर बहुधा

बुलाकर धनादि से सम्मानित करता रहा। इनके घर जाकर भो सहयोग देता रहा। इसके परिणामस्वरूप वह बहन शास्त्रो देवो जी मुझे भाई की भांति मानने लग गई। इन्होंने मुझे बिस्मिल जी का यज्ञकुण्ड, चाकू, लाठी, कम्बल, मृगचर्म और धागों की माला भी दी कि इनको सुरक्षित रखना। इसी यज्ञकुण्ड में बिस्मिल जी प्रतिदिन यज्ञ क्रिया करते थे। फांसी से पहले इसी यज्ञकुण्ड में यज्ञ किया था। इस यज्ञकुण्ड और चाकू का चित्र इस पुस्तक में दे दिया है।

"मन की लहर" पुस्तक की प्रति में इनके घर से ही लाया था। अब यह पुस्तक आपके हाथों में है। आशा है इसका यथोचित आदर करके हमारा उत्साहवर्द्धन करेंगे।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती

ओ३म्

सम्पादकीय-

श्री पण्डित रामप्रसाद 'बिस्मिल' जहां सशस्त्र क्रान्ति के सफल नेता और प्रमुख सचालक थे, वहां वे एक सुयोग्य लेखक और वक्ता भी थे। १९ सितम्बर १९२७ को गोरखपुर जेल में इनको फांसी का दण्ड दिया गया था। अपराध यह था कि भारतवर्ष को अंग्रजों की दासता से मुक्त कराने हेतु हर सम्भव यत्न कर रहे थे। फांसी की कोठरी में रहते हुये व्यक्ति किंकर्त्तव्यविमूढ, भयभीत, पागल, दुबलेन्द्रिय और सोचने समझने की शक्ति से रहित हो जाया करते हैं। परन्तु उसी कालकोठरी में घोर कष्ट सहन करते हुये भी पं० रामप्रसाद बिस्मिल ने जो आत्मकथा लिखी है, वह संसार की सर्वश्रेष्ठ आत्मकथा है। दुःख यह है कि इसका जितना सम्मान होना चाहिये था, वह नहीं हो पाया। इतना महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठ ग्रन्थ आज भी अप्राप्य है, इससे अधिक लज्जा की बात और क्या हो सकती है? इसी कारण बिस्मिल जी का परिचय भारतीय जनता को उतना नहीं है, जितना चन्द्रशेखर आजाद और सरदार भगतसिंह का है।

अपने कुल ३० वर्षीय स्वल्प जीवन में बिस्मिल जी ने क्रान्तिकारी संगठन का कार्य करते हुये अनेक पुस्तक भी लिखे थे। जैसे—१- अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली, २- बोलशेविकों की करतूत (निहिलिस्ट रहस्य बंगला पुस्तक का अनुवाद), ३- मन की लहर, ४- केथोराइन, ५- स्वदेशी रंग, ६- क्रान्तिकारी-जीवन, ७- यौगिक साधन (अरबिन्द घोष की बंगला पुस्तक का अनुवाद), ८- चीनी षड्यन्त्र, ९- निजजीवन की एक छटा (आत्मकथा)। १०- मैनपुरी षड्यन्त्र ॥ इन ग्रन्थों का अन्वेषण करके पुनः

प्रकाशित करना चाहिये। काकोरी षड्यन्त्र नाम से छपी इनकी आत्मकथा को हम शीघ्र ही पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के सम्बध में

पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल केवल ३० वर्ष जीवित रहे। इन तीस वर्षों में ग्यारह वर्ष देश स्वतन्त्रता हेतु क्रान्तिकारी संगठन और आन्दोलन में बीते। इन वर्षों में अच्छे बुरे हजारों व्यक्ति इनके सम्पर्क में आये। जहां एक ओर किसी से सुख मिला, सहायता मिली, सम्मान मिला, वहीं दूसरी ओर दुःख, छल, कपट, धोखा (विश्वासघात) और अपमान करनेवाले पर्याप्त मिले। इसी सुख-दुःखमय जीवन को एकरस बनाने तथा आनन्द से व्यतीत करने के लिये 'कविता' एक उपयुक्त साधन है। इसीलिये बिस्मिल जी जीवनदायिनी उपयोगी कविताओं से बहुत प्यार करते थे। जहां दूसरों की लिखी और बनाई कवितायें याद करते रहते थे वहां स्वयं भी कविता लिखते थे। इस पुस्तक में दोनों ही प्रकार की कवितायें हैं। उनके बलिदान के पश्चात् प्रकाशित आत्मचरित (काकोरी षड्यन्त्र) के अन्त में कुछ कवितायें दी गई हैं, हमने परिशिष्ट में उनको भी समाविष्ट कर दिया है, कुछ दोहे, कविता आदि इनके विशेष सहयोगी श्री अशफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी और रोशनसिंह आदि के भी दे दिये हैं।

जिन कविताओं को बिस्मिल जी ने निज जीवन में बहुत महत्त्व दिया, उनका प्रकाशन स्वरचित कविताओं के साथ 'मन की लहर' नामक पुस्तक के रूप में किया था। यह पुस्तक विक्रमसंवत् १९७७ (१९२०-२१ ईस्वी) में ३६वें राष्ट्रीय महोत्सव पर आर्य भास्कर प्रेस आगरा से प्रकाशित हुवा था। इसे सरकार ने जब्त कर लिया था। पराधीन भारत में इन कविताओं का

जितना महत्त्व था, उससे कम अब भी नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में पराधीन सा रहता ही है। उसके आत्मतोष हेतु भी इन कविताओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पण्डित बिस्मिल के हृदय से निकले उद्गार हृदय को छूते हैं। इसे कोई भावुक और कवि हृदय सहज ही समझ सकता है।

बिस्मिल जी के अत्यन्त घनिष्ठ मित्र और सहपाठी श्री सुशीलचन्द्र सेन (बंगाली) थे। इनका देहान्त हो गया था। इन्हीं की स्मृति में 'सुशील माला' नाम से अनेक ग्रन्थ प्रकाशित करने को योजना बिस्मिल जो ने बनाई। इनका मुख्य कार्यालय पिनाहट (आगरा) में था। यह पुस्तक बिस्मिल जी ने बाबू रघुनाथ सहाय वकील के करकमलों में समर्पित की थी।

यद्यपि इस पुस्तक की प्रतिलिपि श्री स्वामी ओमानन्द जी लगभग २५ वर्ष पूर्व बिस्मिल जी की बहन श्रीमती शास्त्री देवी के घर कोसमाँ (मैनपुरी, उत्तर प्रदेश) से लाये थे। परन्तु हम इसका प्रकाशन अनवधानतावश नहीं कर पाये थे, इसके लिये क्षमा प्रार्थी हैं। परिशिष्ट से पूर्व तक की कविताओं में प्रयुक्त अर्बी, फारसी, उर्दू के कठिन पदों का अर्थ (अथवा भाव) नीचे पाद टिप्पणी में दे दिया है। इन शब्दों के अर्थ शब्दकोश के अतिरिक्त श्री आनन्द स्वामी जी, कालिन्दी कालोनी दिल्ली, वैद्य बलवन्तसिह बलियाना और वैद्य बलराम जी माजरा ने बतलाये हैं, इसके लिये मैं इनका हृदय से आभारी हूँ। अन्त में पाठकों से निवेदन है कि यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उससे अवश्य सूचित करें, अगले प्रकाशन में उसे दूर कर दिया जायेगा।

विद्वदनुचर

विरजानन्द दैवकरणि
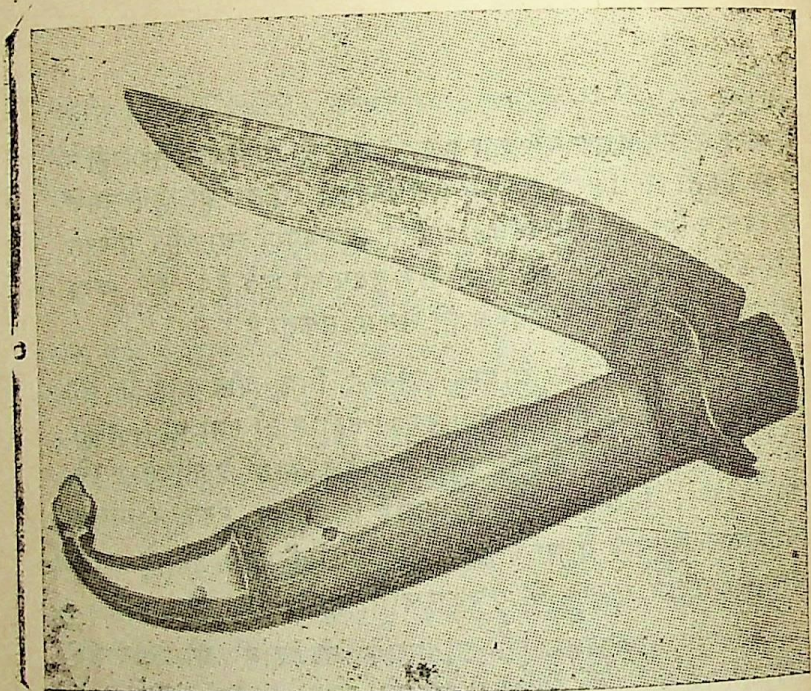
पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' का चाकू
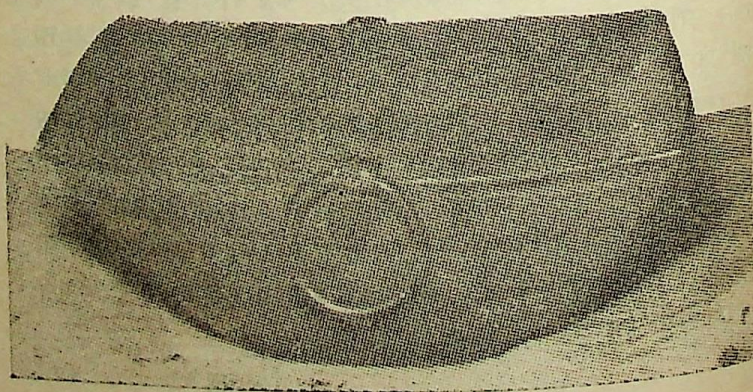
पं० रामप्रसाद बिस्मिल का हवनकुण्ड जिसमें पण्डित जी प्रतिदिन हवन करते थे और फांसी के पहले दिन भी इसी हवनकुण्ड में यज्ञ किया था

ओ३म्

निवेदन

मुझे कविता से कुछ प्राकृतिक प्रेम है, अत एव नये कवियों की रचना को देखने में मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त होता है। इन रचनाओं में से जिस किसी ने मेरे हृदय पर विशेष प्रभाव डाला, उसे मैंने नोट कर कण्ठस्थ किया। जब कभी मैंने मित्रमण्डलो में बैठकर संग्रह की हुई कविताओं में से एक-आध सुनाई है, तब सबने यही आग्रह किया है कि ऐसी कविताओं का संग्रह प्रकाशित होना चाहिये, क्योंकि ये सब कवितायें हृदय पर कुछ विशेष प्रभाव डालती हैं और बड़े-बड़े दुःसमय में जादू का काम करती हैं।

मेरा कई बार का अनुभव है, जब कभी मैं संसार यातनाओं, प्रेमविश्वासियों तथा विश्वासघातियों की चालों से दुःखित हुआ हूं और बहुत हो निकट (सम्भव) था कि सर्वनाश कर लेता, किन्तु इन प्राणप्यारी रचनाओं ने ही मुझे धैर्य बंधा कर संसार-यात्रा की कठिन (राह) पर चलने के लिये उत्साहित किया।

उपर्युक्त कारणों से ही मैंने उचित समझा कि अपने ऐसे दुःखित भाइयों के आग्रह की पूर्त्ति कर उनके कष्ट को बटाऊं। इस ही लिये यह संग्रह प्रकाशित करता हूँ।

मेरे मन में भी जब कोई भाव उमड़े हैं, तो मैंने उन्हें कुछ शब्दों में गूंथने का प्रयत्न किया है, उनमें से एक दो आपके सामने हैं। प्रिय पाठक! उनकी त्रुटियों पर कुछ ध्यान न दीजिये, क्योंकि मैं कोई कवि नहीं और (न) कविताओं के मर्म को (ही) जानता हूं। मेरा परम विश्वास है कि यह मन को लहरों का संग्रह पाठकों के लिये बड़ा हो मनोरंजक सिद्ध होगा। जिसलिये मैं तथा आप सब रचयिताओं के ऋणी रहेंगे।

विनीत
(रामप्रसाद) बिस्मिल

ओ३म्

स्वतन्त्रता का आवाहन (आह्वान)

(१)

किया है हृदयासन तय्यार, तुम्हारे आने भरकी देर,
अगर कुछ वाहन हो दरकार, खड़ा है साहस बनकर शेर।
करेंगे सेवा हम सब दास, तुम्हें देंगे सब भांति सुवास,
तुम्हारा लेकर नाम निराश, तोड़कर सारे बन्धन पाश।
सत्य का झण्डा लेकर वीर, चलेंगे श्रीचरणों के साथ,
पहन कर प्रभापूर्ण प्रिय चीर, देवि ! अब आओ ! करो सनाथ ॥

(२)

ज्ञान की धरी आरती साज, भारती करती है गुणगान,
ध्यान सर[1] डूबा हुआ समाज, कमल पर पद है मधुप समान।
चढायेंगे अक्षत ले शीश, करेंगे प्राणों का बलिदान,
रहेगा देता जो जगदीश, करेंगे वह सब कुछ कुर्बान।
चरण तव धोयेंगे सस्नेह, डालकर सुदृढ प्रेम का पाथ,
तुम्हारी ही होगी यह देह, देवि ! अब आओ ! करो सनाथ ॥

(३)

बहुत हम झेल चुके हैं कष्ट, तुम्हारे विना बने पर दास,
हुए श्रीभ्रष्ट भाग्य के नष्ट, हो रहा पद-पद पर उपहास।
यातना यम को नरक निवास, नहीं क्या-क्या सह डाला हाय,
घोर दारिद्रय कठिन उपवास, किन्तु मुंह से न निकला हाय।
करो अब दया देखकर दीन, बढाओ मां ! करुणा का हाथ,
बिना जल कैसे जोवे मीन, देवि अब आओ ! करो सनाथ ॥

(४)

जननि ! प्रतिभा का करो प्रकाश, हृदय में भर दो वह उत्साह,
करे जो निन्द्य निराशा नाश, और जिसमें हो प्रबल प्रवाह।

१- सरः=तालाब

बहा दे तन में जो नव रक्त, मिटादे हृदयों की जो दाह,
बनादे हमें तुम्हारा भक्त, निकलने दे न मुखों से आह।
हिलादें हम भूमि आकाश, गान कर-कर के तव गुणगाथ,
और सब जगत् कहे शाबास, देवि ! आओ ! करो सनाथ ।।

आर्य्य भूः ! क्यों दुःखी है

(१)

आर्य भू तव शान्तिजा,[1] रमणीयता वह है कहाँ,
क्यों म्लान है तेरा बदन, यह दीनता है कैसी यहाँ ?
क्या अग्निवर्षक धुन्धकर, ज्वालामुखी पर्वत फटा,
जिससे विकृत है आज तेरी, चारुनैसर्गिक छटा।
अथवा यहाँ भूकम्प ने, सर्वनाश किया अहो,
जिससे दबी तव दीनसन्तति, दुःख का कारण कहो।
क्या पड़ा दुष्काल भारी, या प्रलय जल है वहाँ,
या युद्ध का है शोक छाया; प्लेग या पीड़क महा ।।

(२)

सदय पृच्छक[2] ! एक भी है बात इनमें से नहीं,
ज्वालामुखी भूकम्प या, जलपूर भी आया नहीं।
दुष्काल प्लेग ज्वर महा-संग्राम भयप्रद है नहीं,
अस्तित्व इनका दुःख इतना, दे कभी सकता नहीं।
नित्य टकराता हुआ जल, गिरि नदी का शुद्ध है,
है तथा सरवारि गन्दला, क्योंकि वह अवरुद्ध है।
यह बात जन में जाति में, अरु देश में भी सत्य है,
जो अड़ा वह ही सड़ा, सिद्धान्त यह न असत्य है ।।

१- शान्तिजा=शान्ति से उत्पन्न होने वाला । २- पृच्छक=प्रश्नकर्त्ता ।

(३)

स्वाधीन जीवन के लिये, चिर शान्ति मानो काल है,
वह देह, मन, मस्तिष्क को, सब बन्द करती चाल है।
न स्थान है संसार में, सालस्य सुप्तों का कहीं,
जो जब जगत् में सजग हो, लड़ जीतता जीता वहीं।
हाय जो तुम देखते हो, आज यह दुःखित दशा,
उसका अखिल कारण यही अब, मैं बनी हूँ परवशा।
मम बालकों के पैर में, है दासता बेड़ी पड़ी,
हाथ में उनके जड़ी, निःशंकता की हथकड़ी॥

(४)

रो नहीं सकते बिचारे, बोलना अपराध है,
मेरे यहाँ पर जन्म लेना, आज पाप अगाध है।
गर्भ से हो दैन्य के संस्कार जिनको घेरते,
देखे नहीं वे पुत्र माता, के दिनों को फेरते।
परदेश के सब द्वार उनके, हेतु बिल्कुल बन्द हैं,
जा सकेंगे तो कुली बन, भाग्य उनके मन्द हैं।
भाग्य की यह म्लानता ही, मन्द मुझ को कर रही,
परवश्यता नैराश्यता में, है मुझे ले जा रही॥

युवा संन्यासी

(श्री रामतीर्थ जी के संन्यासोपलक्ष्य में)

गुणनिधान मतिमान् सुखी सब भांति एक लवपुरवासी,
युवा अवस्था बीच विप्रकुल केतु हुआ है संन्यासी।
विविध रीति से उस विरक्त को सुहृद् बन्धु समझाय थके,
गङ्गा जी के प्रवाह पर ज्यों, उसे न वे सब रोक सके॥१॥

वृद्ध पिता माता की आशा, बिन ब्याही कन्या का भार,
शिक्षाहीन सुतों की ममता, पतिव्रता नारी का प्यार।
सन्मित्रों की प्रीति और कालेज वालों का निर्मल प्रेम,
त्याग एक अनुराग किया उसने विराग में तज सब नेम ।।२।।

प्राणनाथ, बालक, सुत, दुहिता, यों कहती प्यारी छोड़ी,
हाय ! वत्स !! वृद्धा के धन !!! यों रोती महतारी छोड़ी।
चिर सहचारी रियाजी छोड़ी, रम्य तटी रावी छोड़ी,
शिखा सूत्र के साथ हाय उन बोली पंजाबी छोड़ी ।।३।।

धन्य पञ्चनद भूमि जहां इस बड़भागी ने जन्म लिया,
धन्य जनक जननी जिनके घर इस त्यागी ने जन्म लिया।
धन्य सती जिसका पति मरने से पहले हो जाय अमर,
धन्य धन्य सन्तान पिता जिनका जगदीश्वर पर निर्भर ।।४।।

शोकग्रसित हो गई लवपुरी उसकी हुई विदाई जब,
द्रवीभूत कैसे न हो मन संन्यासी हो भाई जब।
खिन्न अश्रुमुख वृद्ध लगे कहने मंगल तव मारग हो,
जीवनमुक्ति सहाय ब्रह्मविद्या में सत्वर पारग हो ।।५।।

कुछ मित्रों ने हृदय थाम कर, कहा कि प्यारे सुन लेना;
बात एक अन्त की आज हमारी ध्यान जरा इस पर देना।
समदर्शी ऋषि मुनियों को भी भारत प्यारा लगता था,
इस कारण यह विद्याबल में जग से न्यारा रहता था ।।६।।

सर्वत्याग कर महाभाग्य जो देशोन्नति में दे जीवन,
धन्यवाद देते हैं देवगण भी उसका हो प्रमुदित मन।
अपनी भाषा भेष भाव अरु भोजन प्यारे भाइन को,
नहीं समझता उत्तम समझो उससे भली लुगाइन को ।।७।।

१—आतपत्र=धूप, गर्मी से त्राण रक्षा करना।

'एवमस्तु' करी उच्चारण इन सबके उसने उत्तर में,
कहा 'अलविदा' और चला वह मनभावन उस अवसर में।
लगे वर्षने पुष्प और जय जय की तब हो उठी ध्वनि,
मानो भिक्षुक नहीं वहां से चला विश्व का कोई धनी ॥८॥

ज्यों नगरी में होय स्वच्छता जब आता है कोई लाट,
त्यों वन पर्वत प्रकृति परिष्कृत हुये समझ मानो सम्राट्।
निष्कण्टक पथ हुआ पवन से वारिद ने जल छिड़क दिया,
कड़क तडित् ने दई सलामी आतपत्र वृक्षों ने किया ॥९॥

विहंगकुल ने निजकलरव से उसका स्वागत गान किया,
श्वापद शान्त हुये मृगगण ने दक्षिण में आ मान किया।
श्रेणीबद्ध कलित तरुओं ने उसको झुककर किया प्रणाम,
कुसुमित लता और बिरवों ने पुष्प बिछाये राह तमाम॥१०

खड़ा हिमालय निज उन्नत पर मस्तक तत्पद धारण को,
हुई तरङ्गित सुरधुनि तब अभिषेक पुनीति करावन को।
शिक्षा देती मानो सबको जननी सदृश प्रकृति सारी,
विषयविरक्त ब्रह्मचिन्तन रत नर के सब आज्ञाकारी ॥११॥

धर्महित मरना

जो मरता धर्म करने में वह मरके भी नहीं मरता,
अमरता उसको मिलती है जो मरने से नहीं डरता।
है नश्वर देह सब कहते यह मर जावे तो अचरज क्या,
सदा मरने में हमको चाहिए दिखलाना तत्परता।
नहीं जेलों से भय खाना नहीं फांसी से घबराना,
नहीं आत्मा पे इनका है जरा सा भी असर पड़ता।
समर में कट के मर जाना भला शय्या के मरने से,
वह मरके स्वर्ग जाता है यह मरके नरक में सड़ता।
निराशा मन में लाना है समझलो नीच कायरता,
उसे ही सिद्धि मिलती है जो डर का सामना करता॥

७

हकीकत के वचन

तुम प्रबल भय दिखला रहे इसका न मुझको ध्यान है,
मेरे हृदय में सर्वदा निज धर्म ही का मान है।

मैं निज कठिन कर्त्तव्य पद से विमुख होने का नहीं,
आपत्तियाँ क्या दृढ़ हृदय को हैं हिला सकती कहीं।

अपनी भयानक मृत्यु का मुझको तनिक भी भय नहीं,
पर देखना संकट न आवें आपके ऊपर कहीं।

फांसी दिलाना, सिर काटना, मारना आसान है,
पर हृदय पे अधिकार करना तनिक टेढा काम है।

चाहे भले ही काटलो प्रत्येक अंग शरीर का,
विचलित कदापि न हो सकेगा मन हकीकत वीर का।

शतशः कृपाण प्रहार तन पर एकदम यदि हों कहीं,
आनन्द से वह भी सहूंगा धर्म छोड़ूंगा नहीं।

हे पूज्य गुरुवर ! हे पिता ! मन शान्त अपना कीजिये,
कुछ भय न करके जाइये घर धैर्य माँ को दीजिये।

हाँ पूज्य जननी को सुनाना यह संदेशा तात का,
प्रिय जननी ! दृढ विश्वास रखना मैं रहूंगा आपका।

प्रिय जाति के सम्मान हित निज प्राण देना धर्म है,
तन देश वेदी पर चढाना परम पावन कर्म है।

ये प्राण मेरे जायेंगे निज देश सेवा के लिये,
मैं त्यागता हूं देह भावी विजय की आशा किये।

धिक्कार है वह जन्म जिससे जाति का कुछ हित न हो,
उस मृत्यु को धिक्कार है जो निज देश सेवा हित न हो।

जाति सेवा लक्ष्यच्युत सब कार्य को धिक्कार है,
निज देश प्रेम विहीन मन धिक्कार है, धिक्कार है।
मरता हकीकत एक है आज अत्याचार से,
होंगे हकीकत सैंकड़ों इस रुधिर की धार से।
उनके प्रबल उद्योग से उद्धार होगा देश को,
हाँ ! नाश होगा उस समय दु:ख शोक के लवलेश का।

मेरी भावना

न चाहूं मान दुनियां में, न चाहूं स्वर्ग का जाना,
मुझे वर दे यही माता रहूँ भारत पर दीवाना।
करूं मैं कौम की सेवा, पड़ें चाहे करोड़ों दु:ख,
अगर फिर जन्म लूं आकर, तो भारत में ही हो आना।
लगा रहे प्रेम हिन्दी में, पढ़ूं हिन्दी लिखूं हिन्दी,
चलन हिन्दी चलूं हिन्दी, पहरना ओढना खाना।
भवन में रोशनी मेरे, रहे हिन्दी चिरागों की,
स्वदेशी ही रहे बाजा बजाना राग का गाना।
लगें इस देश ही के अर्थ, मेरे धर्म विद्या धन,
करूं मैं प्राण तक अर्पण, यहां प्रण सत्य है ठाना।
नहीं कुछ गैर मुमकिन है, जो चाहो दिल से बिस्मिल तुम;
उठालो देश हाथों पर, न समझो अपना बेगाना॥

बलिवेदी का सन्देश

नहीं लिया हथियार हाथ में नहीं किया कोई प्रतिकार,
अत्याचार न होने देंगे बस इतनी ही थी मनुहार।
सत्याग्रह के सैनिक थे ये सब सहकर रहकर उपवास,
वास बन्दियों में स्वीकृत था, हृदय देश पर था विश्वास।

मूरझा तन था निश्छल मन था जीवन ही केवल धन था;
मुसलमान हिन्दूपन छोड़ा बस निर्मल अपनापन था।

मन्दिर में था चांद चमकता मस्जिद में मुरली की तान,
मक्का हो चाहे वृन्दावन होते आपस में कुर्बान।

सूखी रोटी दोनों खाते, पीते थे गङ्गा का जल,
मानो मल धोने को पाया उसने अहा! उसी दिन बल।

गुरुगोविन्द ! तुम्हारे बच्चे, अब भी तन चुनवाते हैं,
पथ से विचलित न हों, अहा ! गोली से मारे जाते हैं।

गली गली में अली अली की, गूंज मचाते हिलमिलकर,
मारे जाते कर न उठाते, हृदय चढाते खिलखिल कर।

कहो करें क्या बैठे हैं हम, सुनें मस्त आवाजों को,
धोते हैं रावी जल से, हम इन ताजे घावों को।

रामचन्द्र मुखचन्द्र तुम्हारा, घातक से कब कुम्हलाया,
तुमको मारा नहीं वीर, अपने को उसने मरवाया।

जाओ जाओ जाओ प्रभु को, पहुंचाओ स्वदेश सन्देश,
गोली से मारे जाते हैं, भारतवासी हे सर्वेश।

रामचन्द्र तुम कर्मचन्द्र, सुत बनकर आजाओ सानन्द,
बार बार मरकर दिखलाओ, आर्यों का आत्मिक स्वच्छन्द।

चिन्ता है होवे न कलङ्कित, हिन्दू धर्म पाक इस्लाम,
गावें दोनों सुधबुध खोकर, या अल्ला जय जय घनश्याम।

स्वागत है सब जगतीतल का, उसके अत्याचारों का,
अपनापन रखकर स्वागत है, उसकी दुर्बल मारों का।

हिन्दू मुस्लिम ऐक्य बनाया, स्वागत उन उपहारों का,
मर मिटने के दिवस रूप धर, आवेंगे त्योहारों का।

गोली को सहजाओ। जाओ प्रिय अब्दुल करीम जाओ,
अपनी बीती हुई खुदा तक, अपने बनकर पहुँचाओ।
क्यों मारा ? हा ! हा ! क्यों तोड़ी ईसा की प्यारी प्रतिमूर्ति;
भारत में कर डाली तुमने नस नस में बिजली की स्फूर्ति ॥

मेरा जन्म

निज देश सेवा हेतु मेरा, जन्म है संसार में,
यह तुच्छ जन तत्पर सदा, होगा स्वजाति सुधार में।
विद्वेष भावों को मिटाना, मुख्य मेरा कर्म है,
जातीयता के भाव फैलाना, प्रथम शुचि कर्म है।
मम शक्तियाँ होंगी सदा व्यय, देशभक्ति प्रचार में,
उद्देश्य होगा प्रेम फैलाना मनुज परिवार में।
प्रिय देश सेवा कार्य ही में, प्राण मेरे जायेंगे,
चलते समय तक देश का, उपकार कुछ कर जायेंगे।
मुझको निराश न कर सकेंगे, विघ्न बाधायें कभी,
आनन्दमय उद्योगफल को, वे बनायेंगी सभी।
जिस कार्य में बाधा न हो बस, वह सरसताहीन है,
गुणवान् बुद्धिप्रयोग बिन निर्गुण सदृश ही दीन है।
होगा हृदय में सर्वदा ही प्रेम भारत देश का,
होगा प्रवाह शरीर में, शुचि भक्ति के आवेश का।
अपने अपेक्षित कार्य में तत्पर रहूंगा मैं सदा,
उस देश सेवा कर्म में होगी सहायक आपदा।
यदि देशहित मरना पड़े, मुझको सहस्रों वार भी,
तो भी न मैं इस क्लेश को, निज ध्यान में लाऊं कभी।
हे ईश भारतभूमि में शत शत वार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।

है सांसारिक सौख्य की, मुझको कभी इच्छा नहीं,
उस वास्तविक सुख का न इनमें, लेश मिलता है कहीं।

है किन्तु पूर्ण स्वदेश के, उपकार की इच्छा मुझे,
आनन्द इसमें ही अनिर्वचनीय मिलता है मुझे।

निज भाइयों को पददलित होने न दूंगा मैं कहीं,
बदनाम होगा देश यह, देशान्तरों में अब नहीं।

हे देश तुमको वीरगण मिलकर उबारेंगे सभी,
फिर देखते रह जायेंगे इस मध्य भारत को सभी॥

मेरी प्रतिज्ञा

निभाऊंगा प्रतिज्ञा मैं, यह अपने प्राण के प्रण से,
करूंगा देश सेवा मैं, मरूंगा देश सेवा में
उठेंगी देशसेवा की उमंगें देह से मन से॥ (निभा०)
मरण उपरान्त यदि जन्मूँ तो, जन्मूंगा यहीं आकर
कि जिससे देश सेवा हो, नये तन से नये मन से॥ (निभा०)
नहीं कोई सहायक है मेरे भाई ही वैरी हैं,
नहीं चिन्ता मुझे इसकी, जो मैं हूं हीन भी धन से॥ (निभा.)
मेरा यह देश ईश्वर है, पिता माता है सब कुछ है,
इसी ने प्यार से पाला मुझे दुःख सहके बचपन से॥ (निभा.)
ये मेरे पाँव भारत के सदा कर्मों में तत्पर हों,
ये मेरे हाथ भारत का, करेंगे त्राण दुश्मन से॥ (निभा.)
ये मेरे चक्षु देखेंगे, जयी भारत के गौरव को,
जो वह पावेगा होकर के मुक्त बन्धन से॥ (निभा.)
मेरे ये कान भारत की, बड़ाई सुन मग्न होंगे,
मेरा मुख जग को भर देगा, उसी के यश के गायन से॥ (निभा.)

जीवित जोश

(१)

शक्ति का लुटता है सर्वस्व न होंगे हम उसके बटमार,
भक्ति का उठता है वर्चस्व न होगा भारत माँ के द्वार।
व्यक्तियों के सिंहासन हिले हिलाते नहीं हमारे हाथ,
व्यक्ति के शूल स्वयं मिट चले हमारा त्याग प्राण के साथ।
आपसे आप बिना सन्ताप बिना छल पाप हटेंगे दोष,
चरमता चंचलता की न हो हृदय तुम में हो जीवित जोश।

(२)

अनय का अनुपम कुञ्जविहार छोड़ने लगे शुक्ल श्रीकृष्ण
विनय घन जीवन के उपहार सुदामा देते नहीं सतृष्ण।
नहीं सब दूर रहे अक्रूर जरासन्धों से उलझा काम,
बनेंगे विवश विश्व के लिये वीर रणछोड़ पलटकर नाम।
न होगा इसका कारण कर्म रूप से पुण्य भूमि का शेष;
परम परितोष–पूर्ण निर्दोष करेगा जागृति जीवित जोश।

(३)

इधर से छूट रहे हैं बाण-हृदय है आदर से उस
बचाओ ! यों न मिटाओ प्राण-हाय है त्राण नरक की डोर।
अकेले क्यों देते हो प्राण बनेंगे ऐसे कई करोड़
बीज बोने ही की है देर—उपज में तो होती है होड़।
देश का प्यारा पावसकाल भरे भावों के सीकर कोष;
सींच बन माली मानस—खेत जोर से उगे जीवित जोश।

(४)

हिन्द माता की दोनों आंख नाक को रखकर बीचों बीच;
अश्रु की उज्ज्वल धारा छोड़ प्रेम का पौधा देंगे सींच।

मुहम्मद पर सब कुछ कुर्बान मौत के हों तो हों मेहमान;
कृष्ण की सुन मुरली की तान चलो हों सब मिलकर बलिदान।
करेंगे क्या यह वे जड़ जीव जिन्हें जननी जायों पर रोष,
तपस्वी रख सकते हैं टेक मिलाकर सादर जीवित जोश ॥

(५)

पधारो अकुला कर कह उठे, तनिक है देर हाय तू देर,
विजय के उज्ज्वल भर के भाव, विश्वमण्डल को डाला घेर।
पापियों पर तो होंय प्रहार, चढा दो अपने शुद्ध शरीर,
हृदय भाषण कृति[1] सब कुछ एक, टेक के पक्के सच्चे वीर।
आह के बदले निकले वाह, मुझे हो आने में सन्तोष,
रचो बलिदानों के सोपान, लिखा दो जिनपर जीवित जोश ॥

(६)

देश के वन्दनीय वसुदेव, कष्ट में लें न किसी की ओट,
देवकी मातायें हों साथ, पदों पर जाऊंगा में लोट।
जहां तुम मेरे हित तय्यार, सहोगे कर्कश कारागार,
वहां बस होगा मेरा वास, गर्भ का मियतर[2] कारागार।
वर्ष टल गये महीने शेष, साधना साधो राखो होश,
उन्हीं हृदयों में लूंगा जन्म, जहां हो निर्मल जीवित जोश ॥

स्वाधीन कैदी

हथकड़ो बेड़ी दिवालें जेल की,
दीर्घ पिंजरे कटघरे भी हैं खड़े।
और जितनी रोक थी सम्भव थी हुई,
फाटकों पर शस्त्रधर रक्षक अड़े ॥१॥

१—मन, वचन, कर्म
२—मित्र

अंग काटे और जलाये भी गये,
अन्न खाने को नहीं हां मार है।
रात को सोने कभी देते नहीं,
जर्जरित ज्वर से पड़ा बीमार है। २॥
देख जालिम को वहां आते हुए,
शुष्क आनन[1] पर हंसी कुछ आगई।
होंठ फड़के भ्रू तनी आंखें उठीं,
गर्व की आभा बदन पर छा गई॥३॥
सम्हल कैदी कुछ आगत ने कहा,
कह उठा कैदी बताते हो किसे।
मैं नहीं हूं कैदी मैं हूँ आत्मा,
कैद हो वह हो देह पर ममता जिसे॥४॥
जब्त कर सकते मेरा घर बार धन,
बांध सकते हो मेरा तन हाथ मुख।
और दुनियां मेरी निन्दा करो,
छीन सकते हो सभी संसार सुख॥५॥
किन्तु मेरे ईश के विश्वास को,
धर्म को मन को गए इतिहास को।
तुम कभी मेट सकते हो नहीं,
तुच्छ समझूंगा तुम्हारे त्रास को॥६॥
एक मन है हेतु बन्धन मोक्ष का;
द्रव्य जग का शासक है वही।
स्वर्ग कर दे नरक को तम को प्रकाश,
दास उसके हैं दिशा अम्बर मही॥७॥

१—आनन = मुख

सूर्य्यमडण्ल की प्रखर किरणें थकें,
वायु की गति हो नहीं सकती जहाँ।
चञ्चला[1] की शीघ्रता को मातकर,
सहज में ही मन पहुँचता है वहां ॥८॥
सो मुझे तुम कैद करने को चले,
धन्य है इस मूर्खता को वाह वाह।
भीरु हो तुम कैद से डरते रहो,
यह समय आकाश तन चञ्चल हवा ॥९॥
तोष करने के लिए इस देह को,
काट दो जल में बहादो दो जला।
तीर, गोली, तोप, संगीनें चलें,
फट पडे मुझ पर संसार की बला ॥१०॥
देह का तुम नाश कर सकते सही,
किन्तु फिर भी मैं अमर ही रह गया।
कष्ट तुम जितना मुझे देते रहे,
ठीक उतना मैं सदा बढ़ता गया ॥११॥
कौन तू ! जालिम करोड़ों हो चुके,
जलजले आये भयंकर धूम से।[2]
मानवों की पीढियां कुचली गईं,
क्रूरता का व्रत ही पर रह गया।
एक आत्मा ने सम्हल कर हांक दी,
हृदय क्रूरों के हिले मद बह गया ॥१३॥
जब न प्रगटा विश्व का आकार था,
और नहीं इन इन्द्रियों का रूप था।

१—चञ्चला=बिजली
२—यहां प्रतिलिपि में दो पंक्तियां छूटी लगती हैं।

उस समय भी मैं सजग था, था अमर,
कुल प्रकृति का मैं अकेला भूप था ।।१४।।
आज बैरी बन सताता तू मुझे,
हाथ तेरे पड़ हुआ हतज्ञान हूं।
किन्तु रखना याद तू यह सत्यता,
क्षुद्र मत गिन विश्व की मैं जान हूँ ।।१५।।
मिल रहा हूं मैं अनाशाकाश में,
पड़ नहीं सकता जहां पर पाश में।
देह कैदी रह गया उस स्थान पर,
किन्तु देही स्वर्ग में था मान पर।।१६।।

मातृभूमि वियोग

हाय जननी जन्मभूमि छोड़कर जाते हैं हम,
बश नहीं चलता है रह रह करके पछताते हैं हम ।।
स्वर्ग के सुख से भी ज्यादा सुख मिला हमको यहां,
इसलिये तजते इसे हर वार शर्माते हैं हम ।।
अब नदी नालो दरख्तो पक्षियो मेरा कसूर,
माफ करना जोड़ कर[1] तुमसे फरमाते हैं हम ।।
मातृभूमि प्राणप्यारी ! दुःख बहुत तुझको दिया,
कर क्षमा अपराध बारम्बार शिर नवाते हैं हम ।।
कुछ भलाई भी हम तुम सबकी खातिर कर सके,
हो गए बलिदान बस सन्तोष यों पाते हैं हम ।।
मातृभूमि प्राण जो तजते तेरी गोद में,
स्वर्ग को जाते न इसमें झूठ बतलाते हैं हम ।।
शीघ्र करके यत्न अय निज देश ! फिर आकर तुझे,
दुश्मनों से छीन लेंगे खौफ कब खाते हैं हम ।।

1. जोड़ कर = हाथ जोड़

मातृवन्दना

हे मातृभूमि तेरे चरणों में शिर नवाऊं,
मैं भक्तिभेंट अपनी तेरी शरण में लाऊं।
माथे पै तू हो चन्दन, छाती पै तू हो माला;
जिह्वा पे गीत तू हो, मैं तेरा नाम गाऊँ।
जिससे सपूत उपजें श्रीराम कृष्ण जैसे,
उस तेरी धूल को मैं निज शीश पै चढाऊँ।
मानी समुद्र जिसकी धूली पान करके,
करता है मान तेरा उस वैर को मनाऊँ।
सेवा में तेरी सारे भेदों को भूल जाऊँ,
वह पुण्य नाम तेरा प्रतिदिन सुनू सुनाऊँ।
तेरे ही काम आऊँ तेरा ही मन्त्र गाऊँ,
मन और देह तुझ पर बलिदान में चढाऊँ।

विनय

हे हरे यह यातना अब तो सही जाती नहीं,
क्या दयामय दुःख की सीमा कभी आती नहीं।
जन्म से अब तक न जाने कष्ट कितने हैं सहे,
अब तो फटने से बचेगी यह कड़ी छाती नहीं॥
देर करने से विरद[1] की हानि होगी सर्वदा,
दीनबन्धु दयालु श्रुतियाँ क्या तुम्हें गातीं नहीं।
हैं न तारे व्योम में तारे अधम जितने अहो,
क्यों दया हम पर तुम्हारी दृष्टि दिखलाती नहीं॥
बस करो अब बस करो देखो बहुत कुछ हो चुकी;
यह कठिन क्रीडा तुम्हारी अब हमें भाती नहीं॥

१- वृक्ष i

फूल

फूल ! तू क्यों रह्यो व्यर्थ क्यों फूल,
फूल ! तू क्यों व्यर्थ रह्यो क्यों फूल ।

हो मदान्ध निज निर्माता को गयो हृदय से भूल,
रूप रंग लखि करें चाह सब, नाहिं लखे शूल ।
अन्त पथिक पद-दलित होयगी निश्चय तेरी धूल,
चलत समीर सुहावन जबलों, समय रहे अनुकूल ।
तब लों ही सुकुमार मार सम, मोह करें मति भूल,
यौवन मद मत्सर में काटो, परहित कियो न भूल ।
अम्ब कहां से मिल सकता है, यदि बो दिये बबूल,
नश्वर देह मिले माटी में, होकर नष्ट समूल ।
प्यारे घटत आयु क्षण पल-पल, जय हरि मंगल मूल ॥

लाश बेकफन

अगली सी ताजगी हैं, फूलों में और फलों में,
करते हैं रकस[1] अब तक ताऊस[2] जंगलों में ।
अब तक कहीं कड़क है, बिजली की बादलों में,
पस्ती[3] सो आ गई है पर दिल से बलबलों[4] में ।
गुलशमये[5] अंजुमन[6] है गो अंजुमन वही है,
हुब्बे वतन[7] वही है, खाके वतन वही है ।
सदियों से हो रहा है वरहम शमा[8] हमारा,
दुनियां से मिट रहा है नामोनिशाँ हमारा ।
कुछ कम नहीं अजल[9] से ख्वाबेगिरो[10] हमारा,
एक लाश बेकफन है हिन्दोस्ताँ हमारा ।

१- आवाज । २- मोर । ३- कमी (गिरवट) । ४- जोश । ५- फूल की सुन्दरता । ६- बाग । ७- जन्म स्थान । ८- तेज को नष्ट करना ९- मृत्यु । १०- महत्वाकांक्षा (बड़ा स्वप्न) ।

इसके भरे खजाने बरबाद हो रहे हैं,
जिल्लत[1] नशीब[2] वारिस[3] गफलत[4] में सो रहे हैं ।।

स्वतन्त्र गान

अय अहले हिन्द[5] ! कहदो सब एक जबान होकर,
हिन्दोस्ताँ रहेगा हिन्दोस्ताँ बनकर ।
आपस में हम रहेंगे जिस्म और जान होकर,
चमकेंगे आस्माँ पर कौमी निशान बनकर ।
घबरायेंगे न हरगिज बिगड़े जो काम बनकर,
पर अब नहीं रहेंगे हिन्दी गुलाम होकर ।
अब नौजवानो तुम पर इज्जत का ताज होगा,
भारत निवासियों को जिस दिन स्वराज्य होगा ।
दुनियां के लोग हम पर मुतलक[6] नहीं हंसेंगे,
चालों में दूसरों की अब हम नहीं फँसेंगे ।

आहे सर्द[7]

अय सबा[8] क्यों बूवे[9] जाना इस तरफ लाती नहीं,
कुछ वफादारी के जौहर मुझ को दिखलाती नहीं ।
मर गये उलफत[10] में लाखों कैस[11]मजनूँ की तरह,
अय खुदाया ! किस लिये मेरी कजा[12] आती नहीं ।
इन्तजारी है किसी को या तुझे है खौफे[13] हश्र[14],
जान मेरी है लबों[15] पर क्यों निकल जाती नहीं ।

१- अपमान । २- भाग्य । ३- हकदार । ४- लापरवाही । ५- भारतवासी । ६- कतई (बिल्कुल) । ७- ठंडी आह । ८- सुबह की ठंडी हवा । ९- खुशबू । १०- व्यर्थ । ११- जेल । १२- मौत । १३- भय । १४- स्वर्ग-नर्क के फैसले का दिन । १५- होठ ।

दिल छुटा दिलवर[१] छुटा सारा जमाना छुट गया,
वक्त बद[२] का कोई भी अब दोस्त है साथी नहीं ॥

मातम[३]

आओ आओ भाइयो ! दिल खोलकर मातम करें,
हम शहीदाने वतन की बेकसी[४] का गम करें।
साथ वालों ने खुशी से जान दे दी मुल्क पर,
रह गये इस फिक्र में, बैठे हुये हम क्या करें।
राहे हक में जो मरे जिन्दा हैं वे गम उनका क्या,
जीते जी हम मर गये जीने का अपना गम करें।
मानने की जो न हो बात उसको क्योंकर मान लें,
गैर मुमकिन हम अदू[५] के सामने सर खम[६] करें।
आप ही खिलवत[७] में काटें अपने भाई का गला,
आप हो फिर बैठकर अहबाब[८] में मातम करें।
जब यह हालत हो हमारे मुल्क के इफराद[९] की,
जुल्म से अगियार[१०] के फिर चश्म क्या पुरनम[११] करें।
रो लिये नासिर[१२] बहुत अब रोने से होता है क्या,
काम करने का करें अब आहो नाला[१३] कम करें ॥

कैदी बुलबुल की फरियाद

आता है याद हमको, गुजरा हुआ जमाना,
वो झाड़िया चमन की, वह मेरा आशियाना[१४],

१- प्रेमी। २- बुरा। ३- रोना। ४- लाचारी। ५- शत्रु। ६- झुकाना। ७- अकेलापन। ८- प्यारा। ९- व्यक्ति। १०- गैर। ११- चश्म पुरनम=अश्रुपूर्ण आँखें। १२- मित्र। १३- रोना धोना। १४- निवास।

वह सबके साथ उड़ना, वह सैर आसमां की,
वो बाग की बहारें वह सबका मिलके गाना।
पत्तों की टहनियों पर, वह झूमना खुशी से,
ठंडी हवा के पीछे, वह तालियां बजाना।
लगती है चोट दिल पर, आता है याद जिस दम,
शबनम[1] का सुबह आकर, फूलों का मुह धुलाना।
वह प्यारी-प्यारी सूरत, वह मोहिनी-सी मूरत,
आबाद जिसके दम से, था मेरा आशियाना।
आजादियाँ कहाँ वो, अब अपने घोंसले की,
अपनी खुशी से आना, अपनी खुशी से जाना।
तड़फा रही है मुझको, रह-रह के याद घर की,
तकदीर में लिखा था, पिंजड़े का आबोदाना।
इस कैद का इलाही[2], दुखड़ा किसे सुनाऊँ,
डर है कहीं कफस[3] में, मैं गम से मर न जाऊँ।
क्या बदनसीब हूं मैं घर को तरस रहा हूं,
साथी तो हैं वतन में मैं कैद में पड़ा हूं।
आई बहार कलियाँ, फूलों को हँस रही हैं,
मैं इस अन्धेरे घर में, किस्मत को रो रहा हूँ।
बागों में बसने वाले, खुशियाँ मना रहे हैं,
मैं दिलजला अकेला, दुःख में कराहता हूं।
आती नहीं सदाएँ[4], उनकी मेरे कफस[5] में,
होती मेरी रिहाई ऐ काश ! मेरे वश में।
जी चाहता है मेरा, उठकर चमन में जाऊँ,
आजाद होके बैठूँ, और शेर होके गाऊँ।

१- ओस। २- परमात्मा। ३- बन्धन गृह (कारागार)। ४- सदा=आवाज। ५- कफस=कारागार।

बेरी की शाख पर हो, फिर इस तरह बसेरा,
उस उजड़े घोसलें को, फिर जाके मैं बसाऊँ।
चुगता फिरूँ चमन में, दाने जरा-जरा से,
साथी हैं जो पुराने, उनसे मिलूँ मिलाऊँ।
फिर दिन फिरें हमारे, फिर सैर हो चमन की,
उड़ता फिरूँ खुशी से, खाऊँ हवा वतन की।
जब से वतन छुटा है, यह हाल हो रहा है,
दिल ग़म को खा रहा है, ग़म दिल को खा रहा है।
गाना इसे समझकर, खुश हो न गाने वाले,
उजड़े हुये दिलों की, फरियाद यह सदा है।
आज़ाद रहके जिसने, दिन अपने हों गुजारे,
उसको भला खबर क्या, यह कैद क्या बला है।
आज़ाद मुझको करदे, ऐ! कैद करने वाले,
मैं बेगुनाह[1] हूं कैदी, मुझे छोड़ कर दुआ[2] ले।

ईश्वर विनय

ईश्वर दया हो हम पर, अब दम नहीं रहा है;
दुःख और जो उठावें, वह वलवला नहीं है।
बरसें हजारों बीतीं, दुःख सहते-सहते हमको,
क्या भाग्य में हमारे, बिल्कुल दया नहीं है।
हम गिर गये हैं इतने, हस्ती मिटी हमारी,
क्यों हाथ वह दया का, अबतक उठा नहीं है।
तुमने हमें बिसारा, हे नाथ! क्या किया यह;
हमने तो तुमको अब तक, दिल से तजा नहीं है।
भूमि रही न अपनी, न राज्य ही रहा है,
पल्ले हमारे अब तो, कुछ भी रहा नहीं है।

१- बेगुनाह = निर्दोष। २- आशीर्वाद।

करते थे राज्य हम ही, संसार भर में एक दिन,
फूटे जो भाग्य अपने, घर तक रहा नहीं है।
स्वामी कृपा दिखा कर, फेरो हमारे भी दिन,
आधीन दूसरों के, कोई रहा नहीं है।
इङ्गलैंड, फ्रांस, इटली, स्पेन, जर्मनी भी,
आधीनता में पर की, कोई फंसा नहीं है।
जापान, चीन, फारस, तुर्की अमेरिका में,
स्वच्छन्द वायु सदियों से खूब वह रही है।
एक रूस के निवासी, दुःख और पा रहे थे,
देवी स्वतन्त्रते अब, अपना उन्हें रही है।
क्या भाग में हमारे, हो एक बदो गुलामी,
सदियों से जन्मभूमि, जो दुःख उठा रही है।
संसार भर ने हमको, अब छेक-सा दिया है,
आधीनता पराई; ये दिन दिखा रही है।
परमेश ! तुमने हमको, ऐसा भुला दिया क्यों,
कुरुक्षेत्र की प्रतिज्ञा, क्या याद अब नहीं है।
बन्दी दुःखी जनों का, उद्धार आप करने,
जन्मे थे जेल ही में, क्या ध्यान ही नहीं है।
अन्याय कंस का प्रभु, तुमने था फिर मिटाया,
रावण को छोड़ा तुमने, लङ्का में भी नहीं है।
अब देश की दशा फिर, उससे अधिक है बिगड़ी,
बल, बुद्धि, विद्या, लक्ष्मी, कुछ भी रहा नहीं है।
अतएव हे दयामय! सत्वर दया दिखाओ,
अब और देर करनी, तुमको उचित नहीं है।
भारत निवासियों की, आशायें पूरी कर दो,
घर अपना हम सम्हालें, अब दिल में यह ठनी है।

भारत

उजड़ा हुआ पड़ा है, सब गुलिसताने[1] भारत,
बरबाद हो चुका है जन्नत[2] निशाने भारत।
पहिले तमाम वाके[3], सब हो गये फसाने[4],
जाती रही यकायक, वह आने बाने भारत।
भारत की हाय किश्ती, गिरदाब[5] में फंसी है,
किस नींद में सो रहे हो, अय किश्तीबाने[6] भारत।
उठ बैठो नौजवानो, अब तो इसे बचालो,
कुछ-कुछ अभी है बाकी, नामो निशाने भारत।
गर होश में तुम आओ, तो कुछ नहीं है मुश्किल,
फिर वही देख लेना, पहली-सी शाने भारत।
मालूम है तुम्हें कुछ, रोज़ अज़ल[7] से सबके,
उस्ताद रहते आये, हैं आलिमान[8] भारत।
लेकिन हमारी हालत; अब रहम के है काबिल,
वहशी[9] कहा रहे हैं, बाशिन्दगाने भारत।
गर तुमको है मुहब्बत, इस गुलशने वतन से,
यह अहद[10] दिल से करलो; अय बुलबुलाने भारत।
जब तक कि हम में दम है, हमदम बने रहेंगे,
यह सर नज़र[12] है इसकी, यह जां है जाने भारत।

मेरा कौल[12]

उदू[13] के तेज खंजर से, मुझे डरना नहीं आता,
मैं हूं मजबूत टेढ़ा ही, मुझे बनना नहीं आता।

1-बाग। 2-स्वर्ग। 3-घटनायें। 4-कहानी। 5-भंवर। 6-मल्लाह। 7-सदियों से। 8-विद्वान्। 9-जंगली। 10-प्रतिज्ञा। 11-भेंट। 12-प्रतिज्ञा। 13-शत्रु।

जहालत[1] को मिटा दूंगा, अगर है जिन्दगी बाकी,
मुझे बचकर राहे हक से कदम धरना नहीं आता।
है मेरा जिस्मो जां कुरबान प्यारे देश के ऊपर,
देश के वास्ते इनकार; करना ही नहीं आता।
अमर है आत्मा मेरी मुखालिफ[2] गौर से सुनलें,
चढ़ा दें दार[3] पर पीछे, मुझे हटना नहीं आता।
हकीकत की तरह मैं, सर कटा कर खूं से भर दूंगा,
तुम्हें जामे[4] शहादत[5] को अगर भरना नहीं आता।
शमये[6] धर्म का शैदा[7] हूं मैं तो मिस्ले[8] परवाना[9],
कहूं क्या नर्म बिस्तर पर, मुझे मरना नहीं आता।
उन्हें यह फिक्र है हरदम नई तरजे जफा[10] क्या है,
हमें यह शौक है देखें सितम[11] की इनतहाँ[12] क्या है।
गुनहगारों में शामिल हैं गुनाहों से नहीं वाकिफ[13],
सजा को जानते हैं हम, खुदा जाने खता[14] क्या है।
न बिस्मिल हूं मैं वाकिफ नहीं रस्मे शहादत से,
बतादे अब तू ही जालिम, तड़फने की अदा क्या है।
चमकता है शहीदों का लहू, कुदरत के परदे में,
शफक[15] का हुस्न क्या है, फूल की रंगो कवा[16] क्या है।
उम्मीदें मिल गईं मिट्टी में, दर्दे जब्त आखिर है,
सदाए गैब[17] बतलादे मुझे हुक्मे खुदा क्या है।

१- निरक्षरता। २- विरोधी। ३- फांसी। ४- प्याला। ५- बलिदान। ६- दीपक। ७- न्यौछावर। ८- भांति। ९- पतंगे। १०- दुःखदेने के ढंग। ११- जुल्म। १२- अन्तिम सीमा। १३- जानकारी। १४- गलती (दोष)। १५- सुबह की लाली। १६- फूल का रंग। १७- आकाशवाणी।

आपबीती

उरियानी[1] न हैरानी, न थे पांव में छाले,
हम भी थे कभी आह, बड़े नाज़ों[2] के पाले।
जुल खाया[3] मिटे उड़ गई, आजादी औ राहत,
अल्लाह यह दिन अपने तो दुश्मन पै न डाले।
मारा है मिटाया है, हमें आह उन्हीं ने,
कर बैठे थे हम जानो, जिगर जिनके हवाले।
हमने तो हमेशा तेरी खुशनुदी[4] हो चाही,
खुद बिगड़े मगर काम तेरे सब सम्भाले।
उसका यह सिला[5] हमको मिला उफरी[6] मुरव्वत[7],
बरबाद किया डाल दिया जान के लाले।
बेबस हुये जलील[8] हुये मिट तो चुके हम,
अब और क्या कयामत[9] भी जो ढाना हो सो ढाले।
सौगन्ध है तुझ को तेरे उस जोरों-जफा[10] को,
जी भर के हमें जितना, सताना हो सताले।
किस्मत का कभी अपने भी चमकेगा सितारा,
हम भी कभी देखेंगे, आजादी के उजाले।
बदले की लहर तब तेरे सर चढके कहेगी,
था जहर पे केंचल से यह लाचार थे काले।।

आहे सर्द

कहूं क्योंकर जबाँ तो बन्द है, सय्याद[11] के डर से,
टपकती दास्ताँ मेरी, है मेरे दीदये तर[12] से।

१- नंगापन। २- लाड प्यार। ३- धोखा। ४- प्रसन्नता। ५- बदला
६- नकली। ७- स्नेह। ८- अपमानित। ९- प्रलय। १०। जबरदस्ती
सताना। ११- शिकारी। १२- गीली आँखें।

जबाँ खोली ही थी गुलशन में, बस सय्याद आ पहुंचा,
तमन्ना दिल को दिल में, रह गई मेरे मुकद्दर से।
सुना है बागवाँ सय्याद में, कुछ हो गई अनबन,
हवा बदली है शायद हो रिहाई अब सितमगर[1] से।
हैं काटे बाल-व-पर सारे, फंसा कर जाल में पहिले,
कफस[2] है और मैं हूं कर दिया बेघर मुझे घर से।
जमाने की यह नैरंगी[3], नहीं क्या कुछ दिखाती है,
जो कल गुलशन का मालिक था, वह आज एक फूल को तर से।
रिहा करने के वादे सैंकड़ों और फिर मुकर जाना,
ये मजलूमों[4] की आहें टल नहीं सकती तेरे दर से।
तुलू[5] होने लगा सूरज, है मशरिक[6] में इधर कलियाँ,
चटकती हैं खिलेंगे गुंचे[7] गुलशन में नये सर से।
कफे अफसोस[8] मल-मल सर, धुनेंगे तंग दिल वाले,
गले लग-लग मिलेगी जब, यह बुलबुल फिर गुले तरसे।
नये पौधे उगें साखें, फलें फूलें मुबारक हों,
घटा यह प्रेम की अमृत अगर बरसे तो यों बरसे।।

बलिदान

क्या अलम[9] है सर पै गर रक्खी हुई तलवार है,
कम वह हो सकता नहीं, सद्धर्म से जो प्यार है।
देश पर जो हैं फिदा[10], मरने से वो डरते नहीं,
लोग कहते मर गये, किन्तु वो मरते नहीं।
लाख दुःख देवे जमाना, होवे दुश्मन बेशुमार,
एक कदम पीछे न हटते, मुल्क से जिनको है प्यार।

१- अत्याचारी। २- पिंजरा, जेल। ३- जादूगरी, माया। ४- जिन पर जुल्म किया गया हो। ५- उदय होगा। ६- पूर्व दिशा। ७- कलियाँ। ८- अफसोस से हथेलियां मलना। ९- दुःख। १०- न्यौछावर।

नहीं खुशी जीने की उनको, मौत का खतरा नहीं,
आँसुओं का आँख से, गिरता कभी कतरा नहीं।
देश सेवा हित जो होता, शीश जो धड़ से जुदा,
सौभाग्य अपना वे समझते, ऐसे मरने को सदा ॥

इधर हमारे उधर तुम्हारे

चढे हुये हैं दिमाग जैसे,
इधर हमारे उधर तुम्हारे।
बढे न डर है तनाव इससे,
इधर हमारे उधर तुम्हारे ॥
तुम्हें यकीं है जब्र सितम[1] का,
हमें भरोसा है अपने दम का।
हटेंगे हरगिज न पैर पीछे,
इधर हमारे उधर तुम्हारे ॥
फतह हमारी जरूर होगी,
अगर न होगा तो यह न होगा।
न दिल मिलेंगे शीरो शकर[2] हो,
इधर हमारे उधर तुम्हारे ॥
पड़े हैं हस्रत[3] के जख्म दिल में,
नमक छिड़कते हो तो छिड़क लो।
जलेंगे इससे नफ़स[4] दुतरफा,
इधर हमारे उधर तुम्हारे।
यही नहीं गर इसी तरह तुम,
डटे रहोगे नफसकुशी[5] पर।
खतर है खालिक[6] न होवे हामी[7],
इधर हमारे उधर तुम्हारे ।।

१- शक्तिभर अत्याचार। २- दूध खांड। ३- निराशा, दुःख। ४- अन्तरात्मा। ५- आत्महनन। ६- ईश्वर। ७- सहायक।

अजाब[1] है यह समझ के लेना,
अंगार कहती है इसको दुनियाँ।
न हों कहीं खाक[2] उम्मेदों[3] के घर,
इधर हमारे उधर तुम्हारे ।।

हिन्दोस्ताँ हमारा

जमीं मेरी वही है पर, नहीं अब आस्माँ मेरा,
बिरादर तक जुदा हैं आज, कल था कुलजहाँ[4] मेरा ।
जरा हुशियार रहना इससे, अय चर्खे सितम पेशा[5],
कयामत है खुदा का कहर, सोजेनिहाँ[6] मेरा ।
किसी को क्या अगर मैं हालेगम[7] हूं कहने दें,
है दिल मेरा बयाँ[8] मेरा जुबाँ मेरी दहा[9] मेरा ।
गुलो[10] नसरीनो[11] सम्बुल[12] की जगह अब खाक उड़ती है,
उजाड़ा हाय किस बेदर्द ने यों बोसताँ[13] मेरा ।
भलाई है वतन की गर तो अपनी भी भलाई है,
जुदा उससे कभी मुमकीन, नहीं सूदो[14] जियाँ[15] मेरा ।
जमाने की है नैरंगी[16] कि अब तहतुस्सरा[18] में है,
कभी अर्शे मुअल्ला[18] पर, अजीजो[19] था मकाँ मेरा ।
दिलेरी में कभी था पास, अब भी जिसका जी चाहे,
करे आहो फुगाँ[20] में, दर्दे गम इम्तिहाँ मेरा ।

१- तेज वर्षा का पानी । २- राख । ३- आशा । ४- समस्त विश्व । ५- महान् अत्याचारी । ६- छिपी हुई जलन (ताप) । ७- दुःख का सन्देश । ८- कथन । ९- प्रतिभा । १०- फूल । ११- पुष्प विशेष । १२- बालछड़ । १३-बाग । १४- लाभ । १५- हानि । १६- जादूगरी । १७- नीचे (पाताल)। १८- सर्वोच्च स्थान । १९- प्रिय । २०- हृदय से निकलने वाला आर्तनाद ।

गुजरती है जो दिल पर माजरा उसका कहूँ किससे,
बजुज[1] जाते खुदा के कौन है अब राजदाँ मेरा।
तबाहो जिसको किस्मत में लिखी वर्के हसद[2] से थी,
उसी गुलशन की शाखे खुश्क पर है आशियाँ[3] मेरा।
न दिल में दर्द है उसका, न दो आंसू हैं आंखों में,
कहो किस मुह से कहते हो कि है हिन्दोस्ताँ मेरा।

विश्वास का अन्त

जुल्म हमसे नित नये, अब तो सहे जाते नहीं,
कब तलक है दीनबन्धो, दिन वही आते नहीं।
जिनको हम सर्वस्व समझे, और सब कुछ दे दिया,
अब हम वही जालिम बने, करते दया कुछ भी नहीं।
गोरी चिट्टी शक्ल देखी, और हम बेखुद हुये,
दिल जिग़र सब दे दिया, समझे दग़ा कुछ भी नहीं।
बाद थोड़े हो दिनों में असलियत खुलने लगी,
वो तो गैरों के हुये थे पास तक आते नहीं।
जब बुलाते हम उन्हें थे, बात करने के लिये,
तब यही करते कहा, हमको ज़रा फुरसत नहीं।
गैर से मिलकर हमारा, नित गला घोटा किये,
हम लड़कपन जानकर, कुछ ध्यान में लाये नहीं।
हो चुके बिस्मिल हमारी, जान पर जब आ बनी,
तब से समझे चाल हैं विश्वास अब लाते नहीं॥

मादरे हिन्द को आवाज

जो हवाए दहर[4] बदल गई तो जहां का रंग बदल गया,
वह चढा खिजाँ[5] की निगाह में जो दरख्त फूल के फल गया।
न बुताने दैर[6] से जाँ बची न तो लो[7] बुतानेफरंग[8] से,
कोई मल गया जो कलेजे को कोई आके दिल को मसल गया।

१- इससे अतिरिक्त। २- ईर्ष्या का पन्ना (पृष्ठ)। ३- निवास। ४-दुनिया।
५- पतझड़। ६- मूर्तिगृह की मूर्ति। ७- ऊंचाई। ८- इंगलैंड की मूर्ति।

थी जफा[1] व ज़ुल्म की खूं अगर, तो दिखाने को भी भोलापन;
जो कलेजा तड़फा तो समझे वह, कि जिगर खुशी से उछल गया।
हुये बादशाह गुलाम तक, है गवाह हालते बावरी,
जो गिरा था और कहीं, वह यहीं आके सम्हल गया।
न जहाँ में तुगलको सूर हैं, खिलजी मुग़ल लोदी कोई,
मैं वह शमा[2] हूं जिसे देखके जो पतंगा आया वह जल गया।
जिन्हें मैंने दूध पिला दिया, बने आस्तीन के साँप वो,
कोई मेरे बच्चे को डस गया, कोई मुझ पे जहर उगल गया।
जो शरीर[3] बदअतें[4] कर गये वो जफायें[5] करते ही मर गये,
गिरा ओला सर पे फलक[6] से गर तो वह दम में आप ही घुल गया।
जो कदीम ताकतें[7] और थीं, वो मिटीं तो मिट के ही रह गईं,
मैं हो एक जईफ[8] हूं दहर[9] में जो गिरा तो गिर के सम्हल गया।
रहे ठंडे होते जो हुये हुक्मराँ तो न शोर होता बपा[10] यहाँ,
जो छींटा पानी का दे सके तो यह गर्म दूध उबल गया।
नहीं मिटने वाले हैं अय 'फलक'[11], जो हुये हैं वादे हकूक के,
नहीं वापस आता है चुटकी में जो कमाँ से तीर निकल गया॥

गजल

झूठ जो चीज है उससे मुहब्बत कैसी,
खाक हो जाये दम भर में वह सूरत कैसी।
रंग बदल जाये जो कुछ दिन में वह हालत कैसी,
जिन गुलों पर हो खिजा उनकी वह रंगत कैसी।
जो डुबादे तुम्हें मझधार वह मुहब्बत कैसी,
चीज अपनी अगर छीनै तो कुव्वत[12] कैसी।

१- अत्याचार। २- दीपशिखा। ३- उपद्रवी। ४- दुष्टता। ५- अत्याचार। ६- आकाश। ७- पुरानी राज्यसत्ता। ८- वृद्ध। ९- दुनियां। १०- उपस्थित। ११- कवि का उपनाम। १२- शक्ति।

जिसके परदे में मुसीबत हो वह राहत कैसी,
आखिरी वक्त में दूरी हो तो कुर्बत[1] कैसी।
दिल में परहेज की वू हो तो इनायत[2] कैसी
दिल कहीं और फंसा हो तो इबादत[3] कैसी।
मेरा तेरा तो बखेड़ा है कह राधेश्याम;
मौत जब सर पै खड़ी है तो सकूनत[4] कैसी॥

दुःखानन्द

दुःख है प्यारा मुझे यह सुनके न होगा नाशाद[5];
दुःख से है खानए दिल[6] जलवये[7] हक से आबाद।
दुःख जो आ जाता है तो उस दुःख के बहाने से वहीं;
मुझे अय दोस्त! खुदा आता है रह-रह कर याद॥
ऐशो इशरत[8] में भुला देता हूं दिल से हक को,
दुःख में याद आता है हक ताकि हूं दुःख से आबाद।
दुःख न होता तो जमाने में फकत[9] सुख होता,
हो गया होता जमाना भी कभी का बरबाद।
दुःख के परदे में निहाँ[10] यार का जलवा[11] देखा,
दुःख करता हूँ मैं दिलदार से दो-दो फरियाद।
मेरे हक में तेरा आना ही मुबारिक अय दुःख,
चाह से देखता रहता हूं मैं तेरी उफताद[12]॥

सच्ची प्रतिज्ञा

देश के वास्ते हम लाख तकलीफें उठायेंगे,
जरूरत गर पड़ेगी जान पर भी खेल जायेंगे।

१- कष्ट। २- दया। ३- उपासना। ४- ठहराव। ५- अप्रसन्न। ६- हृदय रूपी घर। ७- स्वयं को शृंगारित करके दिखाना। ८- भोग विलास जन्य सुख। ९- केवल (समाप्त)। १०- छुपा हुआ। ११- दिव्य दर्शन। १२- आपत्ति।

बला से तीर बरसें और गले पर चले खंजर,
मगर रखकर क़दम आगे न हम पीछे हटायेंगे।
देश महबूब है अपना है उस पर जिस्मो जाँ कुरबान,
मुखालिफ[1] वार देखें न हम गर्दन हिलायेंगे।
खुशियों से गालियाँ सहकर सहेंगे मार भी सबकी,
न बाज आयें कभी हम सोते आलम को जगायेंगे।
न डर है जेल का हमको न खौफे हथकड़ी कुछ भी,
न जिल्लत[2] देखकर हम शिकन[3] माथे पै लायेंगे।
न ख्वाहिश हमको इज्जत की, न परवा कुछ है जिल्लत की,
हकीकत की तरह हर एक हम भी सर कटायेंगे॥

मौजूदा हालत

न किसी की आँख का नूर हूं, न किसी के दिल का करार हूं,
जो किसी के काम न आ सके, वह मैं एक मुश्ते गुबार[4] हूं।
न दवाए दर्दे जिगर हूं मैं, न किसी की मीठी नजर हूँ मैं,
न इधर हूँ मैं न उधर हूं मैं, न शकेब[5] हूं न करार[6] हूं।
मैं नहीं हूं नगमये[7] जाँ[8] फिजाँ[9] मेरा सुनके करेगा क्या,
मैं बड़े वियोगी की हूँ सदा[10], ओ बड़े दुःखी की पुकार हूँ।
मेरा वक्त मुझ से बिछुड़ गया, मेरा रंग रूप बिगड़ गया,
जो चमन खिजा[11] से उजड़ गया, मैं उसी की फसले बहार हूँ।
पये[12] फातहा[13] कोई आये क्यों, कोई शमा[14] लाके छलाये क्यों,
कोई चार फूल चढाये क्यों, कि बेकसों[15] का मजार[16] हूं।

१- विरोधी। २- अपमान। ३- सिलवट, त्यौरी। ४- मुट्ठीभर पसन्द वस्तु। ५- धैर्य। ६- शान्ति। ७- गाना। ८-जीवन। ९- बढाने वाला। १०- आवाज। ११- पतझड़ (पतझार)। १२- पदचिह्न। १३- बिजेता। १४- दीपक। १५- दुःखी। १६- कब्र।

न अख़तर[1] मैं लपना हबीब[2] हूँ; न अख़तरों[3] का मैं रक़ीब[4] हूँ,
जो बिगड़ गया वह नसीब हूं, जो उजड़ गया वह दियार[5] हूँ।

विश्वासघात

न था मालूम वह जालिम हमें इतना सतायेगा,
फंसाकर दामे उलफत[6] में हमें बन्दा बनायेगा।
छुड़ा करके वतन हमसे बनायेगा हमें कैदी,
दिखा कर आबोदाने[7] को क़फस[8] में हमको फंसायेगा।
बनाने को हमें कैदी, बनेगा बाग का माली,
छिपाकर शक्ल असली को शक्ल दीगर दिखायेगा।
बना करके हमें बन्दा करेगा ऐसी सय्यादी[9],
हमारे सामने ही पास ग़ैरों को बिठायेगा।
समझ कर नातुवाँ[10] हमको करेगा इतनी जल्लादी[11],
जलाकर बालोपर[12] सारे हमें बिस्मिल[13] बनायेगा ॥

———

नाज[14] भी होता रहे होती रहे बेदाद[15] भी,
सब गवारा[16] है हमें सुनते रहो फरियाद भी।
बाग से जाने नहीं देता है, यह लालच मुझे,
फांस कर दो-चार बुलबुल, फंस गया सय्याद भी।
ओ चमन में बसने वालो यह नहीं मुमकिन कभी,
बागवाँ भी खुश रहे, राजी रहे सय्याद भी।
उस बुते बे पीर[17] से मिल करके यह उक़दा[18] खुला,
भोली भाली सूरत वाले होते हैं जल्लाद भी।

१- कवि का उपनाम है। २- प्यारा। ३- नक्षत्रों। ४- ईर्ष्यालु। ५- घर। ६- प्रेमपाश। ७- दानापानी। ८- कारावास। ९- निर्दयता। १०- निर्बल। ११- घोर अत्याचार। १२- पंख और बाजू (शक्ति)। १३- घायल। १४- लाडप्यार। १५- अत्याचार। १६- सह्य। १७- निर्दय और कठोर मन वाले। १८- गांठ (रहस्य)

दिल में रक्खो शौक से उलफत रकीबों की मगर,
हो जगह इतनी कि आ जाये हमारी याद भी।
तुम जो कहते थे बिगड़कर हम न आयेंगे कभी,
यह भी कहदो फिर न आयेगी हमारी याद भी।
हाय क्या हस्रत ज़दा[1] था मेरा दिल ओ कातिल,
हो गया दो दिन में ही आबाद भी बरबाद भी।
अब बुलबुलो बाग़े जहां देखो हमेशा गौर से,
हम बुलबुलें किस तौर फंसकर हो गई बरबाद भी।
पहले तो इख्त्यार उसने की थी तर्ज़[2] बागवाँ,
जबकि फांसा दाम में निकला वही सय्याद भी।
फंस चुके जब दाम में बाकी रहा कुछ भी नहीं,
तब तो वह सैयाद था अब हो गया जल्लाद भी।
चाहे मरें तड़फा करें यों ही वतन की याद में,
पर रहन का जिक्र क्या सुनता नहीं फरियाद भी।
आखिर को बिस्मिल ने किया है इस तरह[3] पर फैसला,
जो कि हैं जालिम रहें वो शाद भी आबाद भी॥

अरमाने दिल

पूछते क्या हो कि क्या अरमाँ[4] हमारे दिल में हैं,
कुछ वतन की याद में आहें दमे बिस्मिल में हैं।
साकिनाने[5] बागे आलम सब रिहाई पा चुके,
एक हमीं आफत के मारे कैद की मुश्किल में हैं।
देश वालो दामने हिम्मत कभी छूटे नहीं,
इम्तिहाने इश्क की हम पहिली मंजिल में हैं।
आहो पहुंचेगी किनारे किश्ती यह भारत की कभी,
कोई दम में देखना हम दामिने हासिल में हैं।

१- निराशाग्रस्त। २- रंग ढंग। ३- पद्धति। ४- प्रसन्न। ५- निवासी।

बज्म[1] में बैठे हुये भी हम अकेले रह गये,
लुत्फे सोहबत खाक है जब गैर की महफिल में हैं ।।

पक्षी पुकार

मुब्तला[2] गो[3] कर लिया सय्याद तूने जाल में,
रह नहीं सकता मगर इस जाल के जंजाल में ।
जा हो सरबत दौलतो[4] इकबाल से क्या है गरज,
बेकसी होती मेरी हमराज इस्तिकबाल[5] में ।
बादा आजादी का करना काटना फिर बालो-पर,
खाक हाथ आयेगी तेरी इस दुरंगी चाल पर ।
मैं हूं आजादी का आशिक कतल की धमकी है क्या,
सर क़लम कर दो अगर जुंबिस[6] हो इस्तिकबाल में,
जब कभी फरियाद की झुंझलाकर यूँ कहने लगे,
बढ गये अब बहुत तुम गुस्ताख कीलो काल[7] में ।
गो जुबाँ है बन्द लेकिन याद रख सिफ्फाक[8] तू,
खून खुद सर चढ पुकारेगा जुबाने हाल में ।।

क्या है

मेरी तरफ में यह बदखयाली,
न जाने उसका खयाल क्या है ।
न रुख मिलावें न मुँह से बोलें,
खुदा हो जाने मलाल क्या है ।।१।।
इसी तमन्ना में मर मिटे हम,
कि जख्मे दिल पर लगेगा मरहम ।
मगर न पूछा यह उसने एक दम,
मरीज़े ग़म तेरा हाल क्या है ।।२।।

१- सभा, गोष्ठी । २- फंसना । ३- यद्यपि । ४- पदप्रतिष्ठा, धनसम्पत्ति
५- स्वागत । ६- विचलित होना । ७- तर्क वितर्क । ८- अत्याचारी ।

वतन पै शैदा[1], वतन पै मफ्तूँ[2],
वतन है लैली हुआ हूं मजनूँ ।
हक़ूक़ अपने ही चाहता हूं बस,
और मेरा सवाल क्या है ॥३॥
इधर रहे रास्ती पै कायम,
न जान जाने का है कुछ भी गम ।
उधर चढ़ो त्यौरियां है पै हम;
खुदा ही हाफ़िज[3] जमाल[4] क्या है ॥४॥
दरे मुहब्बत का जो गदा[6] हो,
मुशीबतों से घिरा हुआ हो,
जो खुद ही फ़ाकों[7] से मर चुका हो,
उसे जो मारा कमाल क्या है ॥५॥
हजार आफत हों लाख मुश्किल,
कभी न घबराओ हजरते दिल ।
पहुंच ही जाओगे ता ब मंजिल,
जनूब[8] क्या है शुमाल[9] क्या है ॥६॥
जो काम करना खुशी से करना,
मुशीबतों से कभी न डरना ।
जो कुछ नतीजे हैं मिल रहेंगे,
जुदाई कैसी विसाल क्या है ॥५॥

मादरे हिन्द की आवाज

मेरे ग़म की है कहानी मुझे किस्साख्वाँ[10] न समझो,
अभी सुनके रो पड़ोगे, इसे दास्ताँ[11] न समझो ।

१- मोहित । २- मोहित, जो आपत्तियों में डाल दिया गया हो । ३-रक्षक । ४- सौन्दर्य । ५- प्रेम का द्वार । ६- भिक्षुक । ७- अनशन, उपवास, व्रत । ८- दक्षिण दिशा । ९- उत्तर दिशा । १०- कहने वाला । ११-कहानी ।

बड़े शौक से उड़ादो मेरे तनके टुकड़े-टुकड़े,
न रुकेगा जज़बयेदिल[1], मुझे बेजबाँ न समझो।
कभी ओज[2] है किसी को कभी है किसी को पस्ती[3],
ये फलक[4] की गर्दिशें[5] हैं, दौरे जमाँ न समझो।
मेरे लाल आँखें खोलो ज़रा हाथ पैर धो लो,
न जगे तो अपनी हस्ती जेरआस्माँ[6] न समझो।
वही कोहनूर शोहरा[7] जिसका था कुल जमीं पर,
है जहान में अभी तक, मुझे बेनिशाँ न समझो।
वही रोब शानो शौकत, वही है जलाल[8] अपना;
हूं ज़ईफ़[9] लाख लेकिन अभी नातुवाँ[10] न समझो।
न मचलिये हज़रते दिल ज़रा सब्र कीजियेगा,
अभी नाज़[11] हो रहे हैं इन्हें सख्तियां न समझो।
मुझे भूलता है पागल, मैं तेरी हो खास माँ हूं,
किसी बेनवा[12] को हिन्दो गिरियः कुनां[13] न समझो।
यकसां रहता है कभी रंगे ज़माना कोई;
जान भी खोता है ग़म से कहीं दाना कोई।
यूं कहा कहना कि जंगल में मंगल मुझको,
मेरी जानिब[14] से कभी रंज न लाना कोई।
जो भरे रखना पिताजी का सभी मिल-मिलाकर,
पोंछना आँसू कोई, सबर दिलाना कोई।
कोई समझाना उन्हें दिल को बहलाना कोई,
पिछले इतिहासों को पढ-पढ के सुनाना कोई।

१- हृदाकर्षण। २- उत्कर्ष। ३- अपकर्ष। ४- आकाश (नियती)।
५- चक्र। ६- आकाश के नीचे। ७- प्रसिद्धि। ८- तेज। ९- वृद्ध।
१०- दुर्बल। ११- लाड प्यार। १२-दरिद्र। १३- विलाप करने वाला।
१४- तरफ।

मैं करीब आपके कदमों से जाहिर हूं दूर,
दिल के आईने में सूरत को दिखलाना कोई।
जाते हैं चौदह वर्ष चुटकी बजाते कहना,
राम आ मिलते हैं आंसू बहाना न कोई।
आयें जब भाई भरत मेरी तरफ से कहना,
राज पाकर न कभी नीति भुलाना कोई।
जब ललक लौटूं पिता माता को सन्तुष्ट करें,
प्यारी प्रजा का कभी दिल न दुखाना कोई।

ठहर

ये बेताबी का आलम हो न दिल ठहरे न जाँ ठहरे,
रुके फ़रियाद क्योंकर किस तरह आहोफुगाँ[1] ठहरे।
उड़ा सकती है सौ-सौ यह निशाने एक ही ज़द[2] से,
मुक़ाबिल तोप से क्या कोई बोसीदाकमाँ[3] ठहरे।
अजब[4] क्या है गुलामों से जो वो बदतर समझते हैं,
हम ठहरे उनके बन्दे वो हमारे हुक्मराँ ठहरे।
उधर हुक्काम की कुव्वत[5] यहां मस्ती का आलम था,
न होते किस तरह कुरबाँ इधर हम नौजवाँ ठहरे।
तपाई जा रही है आजकल तक़दीर मुल्कों की,
कहाँ तक देखिये इस जांच में हिन्दोस्ताँ ठहरे।
खबर अपने वतन की कैसे हो शेखो बरहमन को,
वह बुद्धू पाण्डे ठहरे और ये भूल्लू मियाँ ठहरे।
नहीं दस्ते सितम थकता है उनका एक दम को भी,
जो ये ठहरे तो दिल ठहरे तो जाँ ठहरे।
'त्रिशूल[6]' अपना ठिकाना क्या, बहशत[7] के आलम में,
इधर घूमे उधर घूमे, यहाँ ठहरे वहां ठहरे।

१- आर्तनाद। २- चोट। ३- सड़ा गला धनुष : ४- आश्चर्य। ५-शक्ति।
६- कवि का उपनाम। ७- पागलपन।

निर्वासितों की विदाई

रहें खुश आप अय अहले वतन हम घर से जाते हैं,
बड़ी गर्दिश[1] में हैं तकदीर के चक्कर से जाते हैं।
न तकलीफें सफर का ग़म, न गुर्बत[2] का आलम[3] दिल में,
कि राहे हुब्बे[4] कौमी[5] में हम अपने सर से जाते हैं।
अलम जाने का अपने कुछ नहीं अफसोस इतना है,
कि दिल में हस्रते[6] खिदमत[7] लिये मुजतर[8] से जाते हैं।
इलाही खैर अपने आशियां की बागे आलम में,
अलम की बिजलियां हैं ग़म के बादल बरसे जाते हैं।
खुशा किसमत खुशा किसमत अजब तकदीर है अपनी,
कि सदक़े[9] होके अपनी कौम के सर पर से जाते हैं।
करेगा मुंसिफी[10] आखिर शहे[11] दुनियां ओ दीन अपनी,
कि मह् रूमे[12] अदालत हिन्द के अफ़सर से जाते हैं।
शिकायत हुक्मरां की है न शिकवा आस्माँ से कुछ,
खुदा का हुक्म है तक़दीर के चक्कर से जाते हैं।
मुसीबत एक कसौटी है तिलाई[13] जाँ निसारी[14] है,
खुशा किसमत खरे होकर हम इस पत्थर से जाते हैं।
न शौके[15] सैरे गुलशन है, न है ज़ौक़े[16] चमन दिल में,
हवाए दश्ते[17] गरदी[18] में निकल कर घर से जाते हैं।
वही हैं देश के प्यारे मुहिब्बाने वतन वो हैं,
गुजरते दश्ते गुर्बत[19] में जो शेरे बर[20] से जाते हैं।

१- आपत्ति का समय, दुर्भाग्य। २- दरिद्रता। ३- दुःख। ४- प्रेम।
५- राष्ट्रीय। ६- लालसा। ७- सेवा। ८- दुःख। ९- न्योछावर।
१०- न्याय। ११- दुनियां का शहं शाह। १२- निराश। १३- स्वर्णिम।
१४- न्योछावर। १५- अभिलाषा। १६- आनन्दरसानुभव। १७- जंगल।

१८- घूमने योग्य। १९- परदेश के जंगल। २०- शक्तिशाली।

बहार आई मुबारिक हम सफ़ीराने[1] चमन तुमको,
उठाकर आशियां हम सदमये[2] सर सर[3] से जाते हैं।
किधर हैं दुश्मनाने मुल्क इधर आयें ज़रा देखें,
जो होते हैं वतन पर मस्त इस तेवर[4] से जाते हैं।
हमें शौके शहादत खुद लिये जाता है मक़तल[5] में,
कि हँसते खेलते हम अपने चश्मों सर से जाते हैं।
खुशी से खुर्रमी[6] से अब 'फ़लक' बाख़न्दा[7] पेशानी[8],
निछावर चांदनी करते महे[9] अनवर[10] से जाते हैं।
जुलू[11] में जाँ निसारी अरदली[12] में हुब्बे[13] कौमी को,
दियारे[14] ग़ैर[15] को हम ऐसे कर्रोफ़र[16] से जाते हैं।

सदाए दर्द

लाखों हमारे भाई फ़ाकों[17] से मर रहे हैं,
उफ़ जिनके पास जर[18] है वो चैन कर रहे हैं।
दुःख दर्द की असीरों[19] के कुछ खबर नहीं है,
और ग़ैर कौम वाले जाम[20] अपना भर रहे हैं।
उफ इन्कलाबे दुनियां! अल्लाह रे दौरे[21] गरदूं[22],
नाजों पले हमारे फ़ाकों से मर रहे हैं।
मुफलिस[23] जो आजकल है इनके बुजुर्ग दामन,
इम्दादे[24] ग़ैर हो मैं दौलत के सर रहे हैं।

१- सन्देशवाहक। २- दुःख, आघात। ३- सिर कटाते हैं। ४- अनोखी शान। ५- बलिवेदी। ६- प्रसन्नता। ७- अट्टहास सहित। ८- भाग्य (सिर माथा)। ९- चन्द्रमा। १०- उज्ज्वलतम। ११- आगे बढ़ना। १२- सेवा। १३- प्रेम। १४- घर। १५- पराया। १६- शान। १७- अनशन, भूखे। १८- धन, सम्पत्ति। १९- बन्दी (कैदी)। २०- शराब का प्याला। २१- चक्र। २२- आकाश। २३- भाग्य, नियति। २४- सहायता।

हमदर्दी का हुआ गर क़हत[1] इस तरह मुरव्वज[2],
मांगेंगे भीख यों ही जो पेट भर रहे हैं ।
हिन्दोस्तानियों की अक्लें कुछ ऐसी चर गई हैं,
चारा उन्हीं को देंगे जो खेती चर रहे हैं ।
अग़यार[3] खा रहे हैं खेती हमारी सारी,
हम भूखे मर रहे हैं वे पेट भर रहे हैं ।
सुनते 'फ़लक' कोई ऐसा भी था जमाना,
जिनसे जेर[4] हैं अब हम उन पर ज़बर[5] रहे हैं ।

———

हम उन पर जान देते हैं, उन्हें हम प्यार करते हैं,
मगर वो हैं कि एक बात पर तकरार करते हैं ।
भला इन बेवफ़ाओं से कोई उमीद क्या रक्खे,
कभी इक़रार करते हैं, कभी इन्कार करते हैं ।
जो आ जाती है भूले से कभी लब पर हँसी उनके,
तड़फ कर वर्कशाँ[6] हम पर गज़ब का वार करते हैं ।
हमारे पहलू में दिल है हमारा दिल भी एक दिल है,
वह क्यों इससे बेदिल हो इसे बिस्यार[7] करते हैं ।
सताना अपने शैदा को नहीं अच्छा नहीं अच्छा,
न भूलो अय बुतो देखो तुम्हें हुशियार करते हैं ॥

देश प्रेम

हम भी दिल रखते हैं सीने में जिगर रखते हैं,
इश्क सौदाए वतन रखते हैं सर रखते हैं ।
माना यह जोर[8] ही रखते हैं न ज़र रखते हैं,
बलबला[9] जोश मुहब्बत का मगर रखते हैं ।

१- दुर्भिक्ष । २- प्रचलित । ३- पराये लोग । ४- नीचे, निर्बल, परास्त । ५- ऊपर, श्रेष्ठ, शक्तिशाली । ६- बिजली की सी तेजी से । ७- अधिक । ८- शक्ति । ९- धनसम्पदा । १०- उत्साह ।

कंगूरा अर्श[1] का आहों से हिला सकते हैं,
खाक़ में गुम्बदेगरदूं[2] को मिला सकते हैं।

शौक़ जिनको हो सताने का सतायें आयें,
दूबदू[3] आके हों यों मुँह न छिपायें आयें।
देखलें मेरी वफा[4] आयें जफायें[5] आयें,
दौड़ के लूँगा बलायें[6] मैं बलायें[7] आयें।

दिल वह दिल हो नहीं जिसमें भरा दर्द नहीं,
सख्तियां सब्र से झेले न जो वह मर्द नहीं।

कोहकन[8] हैं किसी शोरीं से सरोकार नहीं,
क़ैस[9] हैं पर किसी लैली के गिरफतार नहीं।
ऐसी बातों से हमें उन्स[10] नहीं प्यार नहीं,
हिज्र[11] के वस्ल[12] के किस्से हमें दरकार नहीं।

जान है उसको पला जिससे यह तन अपना है,
दिल बसा हैगा उसी में जो वतन अपना है।

यह वह गुल है कि गुलों का भी वक़ार[13] इससे है,
गुलशने दहर[14] में एक ताजा बहार इससे है।
बुलबुले दिल को तसल्ली औं क़रार इससे है,
हो रहा गुलचीं[15] की नजरों में यह खार[16] इससे है।

१- स्वर्ग का सिंहासन। २- आकाश का गुम्बद। ३- आमने-सामने। ४- प्रतिज्ञापालन। ५- अत्याचार। ६- बलायें लेना। ७- विपत्तियां। ८- पहाड़ काटने वाला। शीरीं के प्रेमी "फर्हाद" की उपाधि। फर्हाद ने अपनी प्रेमिका की खुशी के लिये उसकी आज्ञा से पहाड़ काटते हुये प्राण त्याग दिये थे। ९- लैली (लैला) के प्रेमी का नाम इसे ही प्रेम के पागलपन में "मजनूं" (पागल) कहने लगे थे। १०- लगाव। ११-विरह। १२- प्रेमी प्रेमिका का संयोग। १३- प्रतिष्ठा। १४- संसार। १५-माली। १६- कांटा, चुभने वाली बात।

चर्ख[1] कज़बाज़[2] के हाथों से बुरा हाल न हो,
यह शिगुफ़्ता[3] रहे हरदम कभी पामाल[4] न हो।
आरजू है कि इसे सीम ओज़र[5] से सींचें,
बन पड़े गर तो इसे आबेगुहर[6] से सींचें।
आबे हैवाँ[7] न मिले दिदयेतर[8] से सींचें,
आ पड़े वक्त तो फिर खूने जिग़र से सींचें।
हड्डियां रिज्क[9] हुमा[10] बन के न बरबाद रहें,
घुल के मिट्टी में मिलें खाद बने याद रहें।
हम सितम लाख सहें शायके[11] बेदाद[12] रहें,
आह थामे हुये रोके हुये फरियाद रहें।
हम रहे या न रहें ऐसे रहें याद रहें,
इसकी परवाह है किसे शाद[13] कि नाशाद[14] रहें।
हम उजड़ते हैं तो उजड़ें वतन आबाद रहे,
हों गिरफदार तो हों पर वतन आजाद रहे।

दर्दे दिल

हिन्द में आह ! चलीं उलटी हवायें क्योंकर,
घिर के इफलास[15] की आई हैं घटायें क्योंकर।
खींच कर गल्ला जो ले जायें विलायत वाले,
फिर कहो भूख हम जाँ गंवायें क्योंकर।

१- नियति चक्र। २- बदनीयत। ३- खिला हुआ। ४- पांव तले रौंदा हुवा। ५- धन सम्पत्ति। ६- मोती का पानी। ७- जीवों द्वारा पीया जाने वाला सामान्य जल। ८- गीली आंखें अर्थात् अश्रु। ९- भक्ष्य (अन्न)। १०- उर्दू, फारसी साहित्य का एक कल्पित पक्षी, जो केवल हड्डियां खाता है। यह भ्रम है कि इसकी छाया पड़ने से मनुष्य राजा बन जाता है। ११- अभिलाषी। १२- अन्याय। १३- प्रसन्न। १४- अप्रसन्न। १५- कंगाली।

है कभी ताऊन[1] कभी क़हत[2] कभी हैज़ा है,
नहीं मालूम टलेंगी ये बलायें क्योंकर ।
क्या कमल जाने जो है गूंज में भौंरे के मज़ा,
गोरे तसलीम[3] करें कालों की रायें क्योंकर ।
हम 'फ़लक' फूंक के रखते हैं ज़मीं पे कदम,
आस्माँ सर पे उठायें तो उठायें क्योंकर ।।

नार ए गम[4]

हूर[5] को छोड़ दिया तेरी मुहब्बत के लिये,
मैं तेरे कूचे[6] में मुज़तर[7] नहीं जन्नत[8] के लिये ।
बेवफा[9] उलफते[10] अग़ियार[11] न छूटी तुझ से,
हम ने अहबाब[12] को छोड़ा तेरी उलफत के लिये ।
आइयें ! आइये !! कर लीजिये दर्शन आकर,
रुह[13] जन्दाँ[14] में तड़पती है ज़ियारत[15] के लिये ।
दे दिया मुझको दवामी[16] तेरा दर्दे फ़ुर्कत[17],
बैठा कस्मामें अजल[18] जिस घड़ी किस्मत के लिये ।
होंगे वो भी जिन्हें वस्ल[19] हुआ होगा नसीब,
हम तो तरसा किये बरसों तेरी सूरत के लिये ।
अय 'फ़लक' जाके किसी और पे आफत ढाना,
क्या हमीं रह गये थे तेरी शरारत के लिये ।
ज़िन्दा दरगोर[20] हूं मैं तेरे बग़ैर अय प्यारे,
हक़ से कुछ मांग दुआ दूरिये फुर्कत के किये ।

१- प्लेग का रोग । २- अकाल । ३- स्वीकार करना । ४- दुःख की ललकार । ५- अनुपम सौन्दर्य युक्त स्त्री । ६- तंग गली । ७- व्याकुल । ८- स्वर्ग । ९- कृतघ्न । १०- प्रेम । ११- विरोधी । १२- मित्रगण । १३- आत्मा । १४- कारावास । १५- तीर्थदर्शन । १६- जीवन भर के लिये । १७- विरह, वियोग । १८- भाग्य विधाता ईश्वर । १९- स्त्री पुरुष का जोड़ा । २०- कब्र में स्थित ।

रोज़ोशब[1] होता गया हाल हमारा अब्तर[2]
कोई दरियां न मुअस्सिर[3] हुआ सेहत के लिये ।
अय 'फलक' वक्ते मुसीबत में है घबराहट क्या,
पेश खीमा[4] है यह इंसान की राहत के लिये ॥

हिन्दोस्ताँ हमारा

है वोस्ताँ[5] हमारा हिन्दोस्ताँ हमारा,
है स्वर्ग से भी बढकर प्यारा वतन हमारा ।
पहरे पै है हमारे इतना बड़ा समन्दर,
कोहे[6] हिमालय भी है पासवाँ[7] हमारा ।
हस्रत[8] से देखते हैं अहले[9] बहिश्त[10] इसको,
जन्नत निशाँ है बेशक हिन्दोस्ताँ हमारा ।
लन्दन के ताजे शाही में कोहनूर देखो,
क्या पूछते हो हमसे नामो निशाँ हमारा ।
सुबकी[11] नहीं हमारी जो सबसे दब गये हैं,
फिर भी हर एक से पल्ला[12] गिराँ[13] हमारा ।
जापानियों का जापान चीन चीनियों का,
हिन्दोस्ताँ के हम हैं हिन्दोस्ताँ हमारा ।
सर सब्जिये[14] वतन की हमने हवाँ जो बाँधी,
क्या खाक कर सकेगी बादे[15] खिजाँ[16] हमारा ।
नाला[17] मिसाले[18] बुलबुल हैं हालते वतन पर,
सोजा[19] जिगर है ग़म से दिल है तपाँ[20] हमारा ।

१- रात-दिन । २- अस्त-व्यस्त । ३- गुणकारी । ४- अगला पड़ाव । ५- बाग । ६- पर्वत । ७- द्वारपाल, रक्षक । ८- लालसा । ९- निवासी । १०- स्वर्ग । ११- लघुता । १२- तराजू का पलड़ा । १३- भारी । १४- हराभरा, समृद्ध । १५- वायु । १६- पतझड़ ऋतु । १७- रोता चिल्लाता हुआ । १८- समान । १९- जलता हुवा । २०- तड़फता हुवा ।

थे दिन कभी कि हम भी रोतों को थे हँसाते,
थमता मगर नहीं अब अश्के[1] रवाँ[2] हमारा ।
सर सब्ज यह जो होगा फूलें फलेंगे हम भी,
हम बागवाँ हैं इसके यह बोस्ताँ हमारा ।
बाँगे[3] जरस[4] से जिसकी चौंके थे सुर्ख़रौ[5] सब,
पीछे पड़ा हुवा है वह कारवाँ हमारा ।
हम भी उठा के छोड़ेंगे सर पे आस्माँ को,
सर पे ज़मीं उठायें लाख आस्माँ हमारा ।
बहरे[6] अदन[7] गुहर[8] को बुलबुल को बाग़ फर्रुख़[9]
हमको "फलक" मुबारक[10] हिन्दोस्ताँ हमारा ।।

सम्पूर्ण ।

१- आंसू । २- बहता हुवा । ३- ध्वनि । ४- घंटा, घड़ियाल । ५-सफलता मण्डित लोग । ६- सागर । ७- स्थान विशेष का नाम । ८- मोती । ९- कल्याणकारी । १०- मंगलमय ।

कुछ राष्ट्रीय अशआर और कवितायें

मेरी यह इच्छा हो रही है कि मैं उन कविताओं में से भी चन्द का यहां उल्लेख कर दूँ, जो कि मुझे प्रिय मालूम होती हैं और मैंने यथासमय कंठस्थ की थीं।

—रामप्रसाद 'बिस्मिल'

(१)

भूखे प्राण तजैं भले, केहरी खरु नहिं खाहिं।
चातक प्यासे हो रहें, बिन स्वांती न अघाहिं॥
बिन स्वांती न अघाहिं, हंस मोती ही खावे।
सती नारि पतिव्रता नेक नहिं चित्त डिगावे॥
तिमि 'प्रताप' नहिं डिगे, होहिं वह सब किन रूखे।
अरि सन्मुख नहिं नवैं, फिरैं चहे बन बन भूखे॥

(२)

चाह नहीं है सुर बाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं है प्यारी के गल पड़ूं हार मैं ललचाऊँ॥
चाह नहीं है राजाओं के शव पर में डाला जाऊँ।
चाह नहीं है देवों के सिर चढ़ूँ भाग्य पर इतराऊँ॥
मुझे तोड़कर हे बनमाली उस पथ में तू देना फेंक।
मातृभूमि हित शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक॥

(३)

भारत जननि तेरी जय हो, विजय हो!
तू शुद्ध और ज्ञान की आगार,
तेरी विजय सूर्य माता उदय हो॥

हों ज्ञान सम्पन्न जीवन सुफल होवे,
संतान तेरो अखिल प्रेममय हो ॥
आयें पुनः कृष्ण देखें दशा तेरी,
सरिता सरों में भी बहता प्रणय हो ॥
सावर के संकल्प पूरण करें ईश,
विघ्न और बाधा सभी का प्रलय हो ॥
गांधी रहें और तिलक फिर यहां आवें,
अरविंद, लाला, महेन्द्र की जय हो ॥
तेरे लिये जेल हो स्वर्ग का द्वार,
बेड़ी की झनझन में वोणा की लय हो ॥
कहता खलिल आज हिन्दू—मुसलमान,
सब मिल के गावो जननि तेरी जय हो ॥

(४)

कोउ न सुख सोया कर के प्रीति ।

सुन्दर कली सेमर की देखी, मुअनाने मन मोहा । कर के प्रीति० ॥
मारी चोंच भुआ जब देखा, पटक पटक सिर रोया । कर के प्रीति० ॥
सुन्दर कली कमल को देखी, भँवरा का मन मोहा । कर के प्रीति० ॥
सारी रैन सम्पुट में बोती, तड़प तड़प जी खोया । कर के प्रीति० ॥

(५)

तू वह मये खुदी है, ऐ जलवयें जानानां ।
हर गुल है तेरा बुलबुल, हर शमा है परवाना ॥
मस्ती में भी सर अपना साक़ी के कदम पर हो ।
इतना तो करम करना, ऐ लगज़िशे मस्ताना ॥
यारब इन्हीं हाथों से पीते रहें मस्ताना ।
यारब वही साक़ी हो, यारब वही पमाना ॥

आंखें हैं तो उसकी हैं, किस्मत है तो उसकी है ।
जिस नें तुझे देखा है, ऐ जलवाँ-ऐ जानानाँ ॥
छेड़ो न फ़रिश्तो तुम जिक्रे ग़मे जानानाँ ।
क्यों याद दिलाते हो भूला हुआ अफ़साना ॥
ये चश्मे हकीकी भी, क्या तेरे सिवा देखें ।
सिजदे से हमें मतलब काबा हो या बुतखाना ॥
साक़ी को दिखा देंगे अंदाज फ़कीराना ।
टूटी हुई बोतल है टूटा हुआ पैमाना ।

(६)

मुर्गे दिल मत रो यहाँ आँसू बहाना है मना ।
अंदलीबों को कफ़स में चहचहाना है मना ॥
हाय जल्लादी तो देखो कह रहा सय्याद यह ।
वक्ते ज़िबहा बुलबुलों को फड़फड़ाना है मना ॥
वक्ते ज़िबहा जानवर को देते हैं पानी पिला ॥
हज़रते इन्सान को पानी पिलाना है मना ।
मेरे खूँ से हाथ रंग कर बोले क्या अच्छा है रंग ।
अब हमें तो उम्र भर मरहम लगाना है मना ॥
ऐ मेरे ज़ख्मे जिगर नासूर बनना है मना ।
क्या करूँ इस ज़खम पर मरहम लगाना है मना ॥
खूवें दिल पीते हैं असगर खाते हैं लख्ते जिगर ।
इस कफ़स में कैदियों को आबोदाना है मना ॥

(७)

अरूजे कामयाबी पर कभी तो हिन्दोस्ताँ होगा ।
रिहा सैय्याद के हाथों से अपना आशियां होगा ॥
चखायेंगे मजा बरबादिये गुलशन का गुलची को ।
बहार आयेगी उस दिन जब अपना बाग़वाँ होगा ॥

वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है।
सुना है आज मक़तल में हमारा इम्तहाँ होगा ।।
जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे वतन हरगिज़ ।
न बाने बादे मुर्दन मैं कहां और तू कहां होगा ।।
यह आये दिन की छेड़ अच्छी नहीं ऐ कातिल ।
बता कब फैसला उनके हमारे दर्मियां होगा ।।
शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा ।।
इलाहो वह भी दिन होगा जब अपना राज देखेंगे।
जब अपनी ही ज़मीं होगी और अपना आसमां होगा ।।

(८)

इम्तहां सब्र का कर लिया हम ने,
सारे आलम को आज़मा देखा ।
नज़र आया न कोई अपना अज़ीज़,
आँख जिसकी तरफ़ उठा देखा ।
कोई अपना न निकला मरहमे राज़,
जिसको देखा सो बेवफ़ा देखा ।
अलगरज़ सब को इस ज़माने में,
अपने मतलब का आशना देखा ।

(९)

हैफ़ हम जिस पे कि तैयार थे मर जाने को ।
यकबयक हम से छुड़ाया उसी काशाने को ।।
आसमाँ क्या यही बाक़ी था गज़ब ढाने को ।
लाके गुरबत में जो रक्खा हमें तड़पाने को ।।
क्या कोई, और बहाना न था तरसाने को ।।१।।

फिर न गुलशन में हमें लायेगा सय्याद कभी ।
क्यों सुनेगा तू हमारी कोई फ़रियाद कभी ।।
याद आयेगा किसे यह दिले नाशाद कभी ।
हम भी इस बाग में थे क़ैद से आजाद कभी ।।
अब तो काहे को मिलेगी यह हवा खाने को ।।२।।

दिल फ़िदा करते हैं क़ुरबान जिगर करते हैं ।
पास जो कुछ है वह माता की नज़र करते हैं ।।
खाना-वीरान कहाँ देखिये घर करते हैं ।
खुश रहो अहले वतन हम तो सफ़र करते हैं ।।
जाके आबाद करेंगे किसी वीराने को ।।३।।

देखिये कब यह असीराने मुसीबत छूटें ।
मादरे-हिन्द के अब भाग खुलें या फूटें ।।
देश सेवक सभी अब जेल में मूजें कूटें ।
हम यहाँ ऐश से दिन-रात बहारें लूटें ।
क्यों न तरजीह दें इस जीने पे मर जाने को ।।४।।

कोई माता की उमीदों पे न डाले पानी ।
ज़िंदगी भर को हमें भेज के काले पानी ।।
मुँह में जल्लाद हुए जाते हैं छाले पानी ।
आब खंजर का पिला कर के दुआ ले पानी ।।
भरने क्यों जायें हम इस उम्र के पैमाने को ।।५।।

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर ।
हमको भी पाला था मां-बाप ने दुःख सह सहकर ।।
वक्ते रुखसत उन्हें इतना भी न आये कहकर ।
गोद में आंसू जो टपकें कभी रुख से बहकर ।।
तिफ़्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को ।।६।।

देश-सेवा हो का बहता है लहू नस-नस में ।
अब तो खा बैठे हैं चित्तौर के गढ़ की कस्में ॥
सर फ़रोशी की अदा होती हैं यूं ही रसमें ।
भाई खंजर से गले मिलते हैं सब आपस में ॥
बहनें तैयार चित्ताओं पे हैं जल जाने को ॥७॥

नौजवानो जो तबीयत में तुम्हारी खटके ।
याद कर लेना कभी हम को भी भूले-भटके ॥
आपके उज़ावे बदन होवें जुदा कट-कट के ।
और सर चाक हो माता का कलेजा फटके ॥
पर न माथे पे शिकन आये कसम खाने को ॥८॥

अपनी किस्मत में अजल से ही सितम रक्खा था ।
रंज रक्खा था मुहिन रक्खा था ग़म रक्खा था ॥
किसको परवाह थी और किसमें यह दम रक्खा था ।
हमने जब वादिये गुरबत में कदम रक्खा था ॥
दूर तक यादे-वतन आई थी समझाने को ॥९॥

अपना कुछ ग़म नहीं पर यह ख़याल आता है ।
मादरे हिन्द पे कब तक यह ज़वाल आता है ॥
हरदयाल आता है योरुप से न पाल आता है ।
कौम अपनी पे तो रह-रह के मलाल आता है ॥
मुंतज़िर रहते हैं हम खाक में मिल जाने को ॥१०॥

मैकदा किसका है यह जामे सबू किसका है ।
वार किसका है मेरी जां यह गुलू किसका है ॥
जो बहे कौम की खातिर वह लहू किसका है ।
आसमां साफ़ बता दे तू उदू किसका है ॥
क्यों नये रंग बदलता है ये तड़ाने को ॥११॥

दर्दमंदों से मुसीबत की हवालात पूछो ।
मरने वालों से ज़रा लुत्फ़ शहादत पूछो ॥
चश्म मुश्ताक से कुछ दीद की हसरत पूछो ।
कुश्तये नाज़ से ठोकर की कयामत पूछो ॥
सोज़ कहते हैं किसे पूछो तो परवाने को ॥१२॥

बात तो जब है कि इस बात की ज़िद्दें ठानें ।
देश के वास्ते कुरबान करें सब जानें ॥
लाख समझाये कोई एक न उसकी मानें ।
कहता है खून से मत अपना गरेबां सानें ॥
नासिहा आग लगे तेरे इस समझाने को ॥१३॥

न मुयस्सर हुआ राहत में कभो मेल हमें ।
जान पर खेल के आया न कोई खेल हमें ॥
एक दिन को भी न मंजूर हुई 'बेल' हमें ।
याद आयेंगा बहुत लखनऊ का जेल हमें ॥
लोग तो भूल ही जायेंगे इस अफ़साने को ॥१४॥

अब तो हम डाल चुके अपने गले में झोली ।
एक होती है फ़कीरों की हमेशा बोली ॥
खून से फाग रचायेगी हमारी टोली ।
जब से बंगाल में खेले हैं कन्हैया होली ॥
कोई उस दिन से नहीं पूछता बरसाने को ॥१५॥

नौजवानो यही मौका है उठो खुल खेलो ।
खिदमते कौम में जो बला आये खुशी से झेलो ॥
देश के सदक़ में माता को जवानी दे दो ।
फिर मिलेंगी न यह माता को दुआयें ले लो ॥
देखें कौन आता है इरशाद बजा लाने को ॥१६॥

(१०)

न किसी की आंख का नूर हूं न किसी के दिल का करार हूँ।
जो किसी के काम न आ सके, मैं वह एक मुश्तेगुबार हूं॥
न दबाए दर्दे जिगर हूं मैं न किसी की मीठी नजर हूं मैं।
न इधर हूं मैं न उधर हूं मैं न शकेब हूं न क़रार हूं॥
मैं नहीं हूं नग़माये जां फ़िज़ां, मुझे सुन के कोई करेगा क्या।
मैं बड़े वियोगी की हूं सदा मैं बड़े दुखी की पुकार हूं॥
न मैं किसी का हूं दिलरुबा, न किसी के दिल में बसा हुआ।
मैं ज़मीन की पीठ का बोझ हूं मैं फलक के दिल का गुबार हूं॥
मेरा बखत मुझ से बिछुड़ गया, मेरा रंग रूप बिगड़ गया।
जो चमन खिज़ा से उजड़ गया मैं उसी को फसले बहार हूं॥
कोई पढ़ने फ़ातिहा आये क्यों कोई आके शमा जलाये क्यों।
कोई चार फूल चढ़ाये क्यों कि मैं बेकसी का मज़ार हूं॥
न 'ज़फ़र' मैं किसी का रकीब हूं न मैं किसी का हबीब हूं।
जो बिगड़ गया वह नसीब हूँ, जो उजड़ गया वह दयार हूं॥

अच्छे दिन आने वाले हैं ॥११॥

ऐ मादरे हिन्द न हो गमगीन अच्छे दिन आने वाले हैं।
आज़ादी का पैगाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं॥
मां तुझको जिन जल्लादों ने दी हैं तकलीफ जईफी में।
मायूस न हो मगरूरों को हम मज़ा चखाने वाले हैं॥
कमजोर हैं और मुफलिस हैं हम, गो कुंज क़फस में बेबस हैं।
बेबस हैं लाख मगर माता, हम आफत के परकाले हैं॥
हिन्दु और मुसलमा मिल करके, चाहे जो कर सकते हैं।
ऐ चर्ख कुहन हुशियार हो तू, पुरशोर हमारे नाले हैं॥
मेरी रूह को करना कैद क़फस इन्काम से बाहर है उनके।
आज़ाद है अपना दिल शैदा, गो लाख जुवां पर ताले हैं॥

मगलूब जो हैं होंगे गालिब महकूल जो हैं होंगे हाकिम ।
सदा एक सा वक्त रहा किसका, कुदरत के तौर निराले हैं ।।
आज़ादी के मतवालों ने यह कैसा मन्त्र चलाया है ।
लरजा है जिससे अर्श शमाँ, सरकार को जान के लाले हैं ।

हसरते दिल ॥१२॥

देखना है किस कदर दम खंज़रे क़ातिल मैं है ।
अब भी यह अरमान यह हसरत दिले बिस्मिल में है ।।
गैर के आगे न पूछो इस में है एक खास राज ।।
फिर बता देंगे तुम्हें जो कुछ हमारे दिल में है ।
खींच कर लाई हैं सबको क़त्ल होने की उमीद ।
आशिकों का आज जमघट कूचये कातिल में है ।।
फ़िरते हो क्यों हाथ में चारों तरफ खंजर लिये ।
आज है यह क्या इरादा आज यह क्या दिल में है ।।
एक से करता नहीं क्यों दूसरा कुछ बातचीत ।
देखता हूँ मैं जिसे वह चुप तेरी महफिल में है ।।
उन पर आफत आयेगी एक रोज मर ही जांयके ।
वह तो दुनिया में नहीं जो कूचये कातिल में है ।।
एक जानिब है मसीहा एक जानिब है कज़ा ।
किस कशामश में पड़ी है जान किस मुश्किल है ।।
हौसिला कितना तड़फने का तेरे बिस्मिल में है ।

(१३)

आओ भाइयो दिल खोल कर मातम करें ।
हम शहीदाने वतन की बेकसी का ग़म करें ।।
साथ वालों ने खुशी से जान देदी मुल्क पर ।
रह गये इस फिक्र में, बैठे हुये हम क्या करें ।।

राहे हक़ में जो मरे ज़िन्दा हैं वह ग़म उनका क्या ?
जीते जी हम मर गये जीने का अपना ग़म करें ॥
मानने की जो न हो वह बात क्योंकर मानलें ।
गैर मुमकिन हम उदू के सामने सर ख़म करे ॥
आप ही खिलवत में काटें अपने भाई का गला ।
आप ही फिर बैठ कर अहबाब में मातम करें ॥
जब यह हालत हो हमारे, मुल्क के इफ़राद की ।
जुल्म से अग़ियार के फ़िर चश्म क्या पुरनम करें ॥
बहुत रोये अब तो 'बिस्मिल' रोने से होता क्या ?
काम इन कैसा करें अब आहोनाला कम करें ॥

(१४)

मुहब्बाने वतन होंगे हजारों बे वतन पहिले ।
फलेगा इण्डिया पीछे भरेगा एण्डमन पहिले ॥
मुसीबत आ कयामत आ यहाँ ज़ंजीरो ज़िन्दा हैं ।
यहां तैयार बैठे हैं ग़रीबाने वतन पहिले ॥
जमीने हिन्द भी फूले फलेगी एक दिन लेकिन ।
मिलेंगे ख़ाक में लाखों हमारे गुल बदन पहिले ॥

(१५)

हर्फे शिकवा आशिकी में लब पै लाना है मना ।
सामने बेदर्द के आँसू बहाना है मना ॥
क़ातिले सफफाक को मक़तल में हुक्मे आम है !
आशिके जांबाज को सर का हिलाना है मना ॥
है यह बुलबुल को हिदायत गुल को अजरुये अदब ।
शाखे गुल पर बैठकर सर का हिलाना है मना ॥
बदनसीबी देखिये मुझ आशिके नाकाम की ।
उसके कूचे से गुजर कर मेरा जाना है मना ॥

जब हँसी आई मुझे तो वह भी फ़रमाने लगे ।
आशिकों को इश्क में हंसना हंसाना है मना ।।

(१६)

देश हित पैदा हुए हैं देश पर मर जायेंगे ।
मरते मरते देश को ज़िन्दा मगर कर जायेंगे ।।
हमको पीसेगा फलक चक्की में अपनी कब तलक ।
खाक बनकर आंख में उसकी असर हो जायेंगे ।।
कर वही वर्गे खिज़ा को बादे सर सर दूर क्यों ।
पेशवाए फ़स्ले गुल है खुद समर कर जायेंगे ।।
खाक में हम को मिलाने का तमाशा देखना ।
तुख्मरेजी से गये पैदा शजर कर जायेंगे ।।
नौ नौ आंसू जो रुलाते हैं हमें उनके लिये ।
अश्क के शैलाब से बरपा हशर कर जायेंगे ।।
गर्दिशे गरदाब में डूबे तो परवाह नहीं ।
बहरे हस्ती में नई पैदा लहर कर जायेंगे ।।
क्या कुचलते हैं समझ कर वह हमें बर्गे हिना ।
अपने खूं से हाथ उनके तर बतर कर जायेंगे ।।
नक़शे पा है क्या मिटाता तू हमें चारे फ़लक ।
रहबरी का काम देंगे गुज़र कर जायेंगे ।।

(१७)

पूछते क्या हो कि क्या अरमां हमारे दिल में है ।
कुछ वतन की याद में आहे दमें 'बिस्मिल' में है ।।
साकियाने बाग आलम सब रिहाई पा चुके ।
एक हमी आफत के मारे कैद की मुशकिल में हैं ।।
देश वालो दामने हिम्मत कभी छोड़ो नहीं ।
इम्तहाने इश्क़ की हम पहिली मंजिल में हैं ।।

आही पहुंचेगी किनारे किश्तीए भारत कभी ।
कोई दम में देखना हम दामने साहिल में हैं ॥

(१८)

मिट गया जब मिटने वाला फिर सलाम आया तो क्या ?
दिल की बरबादी के बाद उनका पयाम आया तो क्या ?
काश अपनी जिन्दगी में हम यह मञ्जर देखते ।
यूँ सरे तुरबत कोई महशर खराम आया तो क्या ?
मिट गईं सारी उम्मीदें मिट गये सारे खयाल ।
उस घड़ी गर नामावर ले कर पयाम आया तो क्या ?
ऐ ! दिले, नाकाम मिट जा अब तू कूंचे यार में ।
फिर मेरी नाकामियों के बाद काम आया तो क्या ?
आखिरी शब दीद से काबिल थी 'बिस्मिल' की तड़प ।
सुबह दम गर कोई बालाये बाम आया तो क्या ?

(१९)

गैर हालत है मेरी देखने आयें कोई ।
कौन है किस्सा यह ग़म जिसको सुनाये कोई ॥
रो के हर एक से कहती है ये भारत माता ।
मुझ को कमजोर समझकर न सताये कोई ॥
दूध बचपन में सपूतों को पिलाया मैं ने ।
अब ज़ईफ़ी में दवा आके पिलाये कोई ॥
बाप को बेटे से है भाई को भाई से मलाल ।
रंज आपस के जो हैं इनको मिटाये कोई ॥
ख्वाब ग़फ़लत में पड़े सोते हैं जो अहले वतन ।
होश में लाये कोई इनको जगाये कोई ॥
क्या गिनाने कोई अनफ़ास है तेतीस करोड़ ।
काम एक मेरी मुसीबत में तो आये कोई ॥

यह ज़माने की है खूबी यह मुक़द्दर की है बात ।
चैन से सोये कोई चैन न पाये कोई ।।
फिर न बिस्मिल रहे दुनियां में कोई ऐ ! 'बिस्मिल' ।
फिर न आज़ार ज़माने के उठाये कोई ।।

(२०)

मानस हों तो वहीं रसखान बसों ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन ।
जो पशु हों तो कहा बस मेरो चरों नित नन्द की धेनु मंझारन ।।
पाहन हों तो वही गिरि को जो कियो ब्रज छत्र पुरन्दर धारन ।
जो खग हों तो बसेरो करौं वहि कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन ।।

× × × ×

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारों ।
आठहू सिद्धि नवौ निधि को सुख नन्द की धेनु चराय बिसारौं ।।
रसखान सदा इन नैनन सों ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारों ।
कोटिन हू कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं ।।

गजल[1]

देश की खातिर मेरी दुनियां में यह तावीर हो ।
हाथ में हो हथकड़ी पैरों पड़ो जंजीर हो ।।
शूली मिले फांसी मिले या कोई भी तदबीर हो ।
पेट में खंजर दुधारा या जिगर में तीर हो ।।
आंख खातिर तीर हो मिलती गले शमशीर हो ।
मौत की रक्खी हुई आगे मेरे तस्वीर हो ।।

---

१. यह कविता पण्डित रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने शाहजहांपुर में "भारत दुर्दशानाटक" में गाई थी । तब जनता की आंखों से पानी बहने लगा था । उस समय पण्डित जी को एक स्वर्णपदक और पारितोषिक मिला था ।

मरकर भी मेरी जान पर जहमत बिला ताखीर हो।
और गर्दन पर धरी जल्लाद ने शमशीर हो॥
खासकर मेरे लिए दोज़ख नया तामीर हो।
ग्रलगरज जो कुछ हो मुमकिन वह मेरी तहकीर हो॥
हो भयानक से भयानक भी मेरा आखीर हो।
देश की सेवा ही लेकिन एक मेरी तकशीर हो॥
इससे बढकर और दुनियां में अगर ताजीर हो।
मंजूर हो ! मंजूर हो !! मंजूर हो!!! मंजूर हो !!!!
मैं कहूंगा फिर भी अपने देश का शैदा हूं मैं
फिर करूंगा काम दुनियां में अगर पैदा हुआ॥

मेरा रंग दे बसंती चोला

इसी रङ्ग में रङ्ग के शिवा ने मां का बन्धन खोला।
यही रङ्ग हल्दीघाटी में खुलकर के था खेला।
नव वसन्त में भारत के हित वीरों का यह मेला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला

कुछ गाने जो अभियुक्त कचहरी जाते समय गाया करते थे, इस प्रकार हैं—

(१)

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजुये कातिल में है।
रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में,
लज़्ज़ते सहरान वर्दी दूरिये मञ्जिल में है।
वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ,
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है।
आज फिर मकतल में क़ातिल कह रहा है बारबार,
क्या तमन्नायें शहादत भी किसी के दिल में है।

ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत ! मैं तेरे ऊपर निसार,
अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है।

अब न अगले बलबले हैं और न अरमानों की भीड़,
एक मिट जाने की हसरत, अब दिले 'बिस्मिल' में है।

(२)

भारत न रह सकेगा, हरगिज़ गुलाम खाना।
आज़ाद होगा होगा, आता है वह ज़माना।।

खूं खौलने लगा है, हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का, हम बन्द जुल्म ढाना।।

क़ौमी तिरंगे झण्डे, पर जां निसार अपनो।
हिन्दू, मसीह, मुस्लिम, गाते हैं यह तराना।।

अब भेड़ और बकरी, बनकर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का, होगा यही ठिकाना।।

परवाह अब किसे है, जेल ओ दमन की प्यारो।
एक खेल हो रहा है, फांसी पै झूल जाना।।

भारत वतन हमारा, भारत के हैं हम बच्चे।
माता के वास्ते है, मंजूर सर कटाना।।

(१) अपने ही हाथों से सर कटाना है हमें।
मादरे हिन्द को सर भेंट चढ़ाना है हमें।।

(२) एक दिन होगा कि हम फांसी चढ़ाये जायेंगे।
नौ जवानो देखलो हम फिर मिलने आयेंगे।।

(३) हमने इस राज्य में आराम न कोई देखा।
देखा जो ग़रीबों को तो रोते देखा।।
यह [illegible] उल्फत गाफिल नजर आता है।

बीमार का बच जाना मुश्किल नजर आता है ॥
है दर्द बड़ी नयामत देता है जिसे खालिक ।
जो दरदे मुहब्बत के क़ाबिल नज़र आता है ।
जिस दिल में उतर जाये उस दिल को मिटा डाले ।
हर तीर तेरा जालिम क़ातिल नजर आता है ॥
मजरूह न थो जब तक दिल दिल ही न था मेरा ।
सदके तेरे तीरों का 'बिस्मिल' नजर आता है ॥

यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्रों बार भी,
तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊं कभी ।
हे ईश, भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो,
कारण सदा हो मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो ॥
मरते 'बिस्मिल' रोशन, लहरी, अशफ़ाक, अत्याचार से;
होंगे पैदा सैकड़ों उनके रुधिर की धार से ॥
उनके प्रबल उद्योग से उद्धार होगा देश का,
तब नाश होगा सर्वथा दुःख शोक के लवलेश का ॥

फांसी

(१)

उमड़ आए आंखों में प्राण, श्वास में आई अन्तिम वायु ।
धूल में मिलने अब चली, फूल सम खिलकर मेरी आयु ॥

(२)

उठा था मन में मेरे भाव; बसूंगा मृत्यु वधू के द्वार ।
और निज रक्त रंग से साज, शत्रु को दूंगा कुछ उपहार ॥

(३)

वधिक ! धिक् अधिक करे मत, देर खींच तख्ते को रस्सी डार ।
चलूं इस जीवन के उस पार, चखा दे मृत्यु वधू का प्यार ॥

क्या ही लज्ज़त है कि रग रग से यह आती है सदा ।
दम न ले तलवार जब तक जान 'बिस्मिल' में रहे ॥

"कबीरा" यह शरीर सराय है इसमें भाड़ा देके बस ।
जब भटियारी खुश रहेगी तब जीवन का रस ॥ १ ॥
'कबीरा' क्षुधा है कूकरी करत भजन में भंग ।
याको टुकरा डारि के सुमिरन करो निशङ्क ॥ २ ॥
नींद निसानी नीच की उठ 'कबीरा' जाग ।
और रसायन त्याग के नाम रसायन चाख ॥ ३ ॥
चलना है रहना नहीं, चलना बिसवे बीस ।
'कबीरा' ऐसे सुहाग पर कौन बंधावे सीस ॥ ४ ॥
अपने अपने चोर को सब कोई डारे मारि ।
मेरा चोर जो मोहि मिले सर्वस डारूं वारि ॥ ५ ॥
कहा सुना की है नहीं देखा देखी बात ।
दूल्हा दुल्हिन मिलि गये सूनी परी बरात ॥ ६ ॥
नैनन की करि कोठरी पुतरा पलंग बिछाय ।
पलकन की चिक डारि के पीतम लेहु रिझाय ॥ ७ ॥
प्रेम पियाला जो पियें सीस दक्षिना देय ।
लोभी सीस न दे सके नाम प्रेम का लेय ॥ ८ ॥
सीस उतारे मुंह धरे तापै राखे पांव ।
दास 'कबीरा' यूं कहे ऐसा होय तो आव ॥ ९ ॥
निन्दक नियरे राखिये आंगन कुटी बनाय ।
विन पानी साबुन बिना उज्ज्वल करे सुभाय ॥ १० ॥
थातो नर तन पाय के क्यों करता है नेह ।
मुंह उज्ज्वल कर सौंप दे जिसको जिसकी देह ॥
जिन्हें हम हार समझे थे गला अपना सजाने को,
वही अब नाग बन बैठे हमारे काट खाने को ॥

तलवार खूँ में रंग लो, अरमान रह न जाये।
'बिस्मिल' के सर पै कोई अहसान रह न जाये॥

वह फूल चढ़ाते हैं तुर्बत भी दबी जाती है।
माशूक के थोड़े से भी एहसान बहुत हैं॥

सतायें तुझको जो कोई बेवफा 'बिस्मिल'।
तो मुंह से कुछ न कहना आह! कर लेना॥

असगर हरीम इश्क में हस्ती ही जुर्म है।
रखना कभी न पांउ यहां सर लिये हुये॥

जो कुछ किया सो तैं किया, मैं कुछ कीन्हा नाहिं।
जहां कहीं कुछ मैं किया, तुम ही थे मुझ मांहि॥

महसूस हो रहे हैं बादे फना के झोंके।
खुलने लगे हैं मुझ पर इसरार जिन्दगी के॥

बारे अलम उठाया रंगे निशात देखा।
आये नहीं हैं यूं ही अन्दाज बे हिसी के॥

वफा पर दिल को सदके जान के नजरे जफा करदे।
मुहब्बत में यह लाजिम है कि जो कुछ हो फिदा करदे॥

बहे बहरे फ़ना में जल्द यारब लाश 'बिस्मिल' की।
कि भूखी मछलियां हैं जौहरे शमशीर क़ातिल की॥

किन्तु—समझकर फूंकना इसको जरा ऐ दागे नाकामी।
बहुत से घर भी हैं आबाद इस उजड़े हुए दिल से॥

बिस्मिल की दिले आरजू 'बिस्मिल' में रह गई।
तलवार खिचके पंजए क़ातिल में रह गई॥

सर फरोशाने वतन फिर देखलो मक़तल में है।
मुल्क पर कुर्बान हो जाने के अरमाँ दिल में हैं॥

तेग है जालिम की यारो और गला मजलूम का।
देख लेंगे हौसला कितना दिले कातिल में है ॥

सोरे महशर बावपा है मार का है धूम का।
बलबले जोशे शहादत हर रगे 'बिस्मिल' में है ॥

मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूं न मेरी आरजू रहे।

जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र या तेरी जुस्तजू रहे ॥

जिन्दगी जिन्दा दिली को जान ऐ रोशन।
वरना कितने मरे और पैदा होते जाते हैं ॥
(वरना कितने हुए पैदा व फना होते हैं)

कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह है।
रखदे कोई जरा सी खाके वतन कफन में ॥

मातायें अब करें न ममता देशप्रेम मतवालों की।
पिता न मोह करें पुत्रों का बलि दें अपने लालों की ॥

वीर पत्नियां बनें न बाधक पतियों को वह विदा करें।
आजादी ले आओ कहकर फर्ज प्रेम से अदा करें ॥

हम सरेदार बसर शौक जो घर करते हैं।
ऊंचा सर क़ौम का हो और यह सर करते हैं ॥

सूख जाये न कहीं पौधा यह आजादी का।
खून से अपने इसे इसलिए तर करते हैं ॥

फांसी से कुछ घण्टे पहले श्री अशफाक उल्ला खाँ ने ये कवितायें लिखी थीं —

फ़ना है सब के लिए हम पै कुछ नहीं मौक़ूफ,
बक़ा है एक फ़कत जाति किबिया के लिए।

(नाश तो सब का है, एक हमारा ही क्या, अविनाशी तो केवल परमात्मा ही है।)

× × ×

तंग आकर हम भी उनके जुल्म से बेदाद से
चल दिये सूये अदम ज़िन्दाने फौज़ाबाद से

× × ×

तनहाइए गुरबत से मायूस न हो 'हसरत'
कब तक न खबर लेंगे याराने बतन तेरी।

× × ×

बजुर्में आरज़ू पै जिस क़दर चाहे सज़ा दे लें,
मुझे खुद ख्वाहिशे ताज़ार है मुलज़िम हूं इकरारी।

(१)

अफसोस ! क्यों नहीं है वेह रूह अब वतन में ?
जिस ने हिला दिया था दुनियां को एक पल में॥

ऐ पुख्ताकार—उल्फत हुशियार डिग न जाना,
मराज़ आशकां है इस दार और रसन में॥

मौत और जिन्दगी है दुनियां का सब तमाशा,
फरमान कृष्ण का था, अर्जुन को बीच रण में।

कुछ आरज़ू नहीं है, है आरज़ू तो यह है,
रख दे कोई जरा सी खाके वतन कफन में।

सैय्याद जुल्म पेशा आया है जब से 'हसरत',
हैं बुलबुले कफस में जाग़ोजगन चमन में।

(२)

बुजदिलों ही को सदा मौत से डरते देखा,
गो कि सौ बार उन्हें रोज ही मरते देखा।
मौत से वीर को हमने नहीं डरते देखा,
तख्तये मौत पै भी खेल ही करते देखा।
मौत एक बार जब आना है तो डरना क्या है,
हम सदा खेल ही समझा किये मरना क्या है।
वतन हमेशा रहे शाद काम और आज़ाद,
हमारा क्या है, अगर हम रहे, रहे न रहे॥

(३)

न कोई इङ्गलिश न कोई जर्मन न कोई एशियन न कोई तुर्की।
मिटाने वाले हैं अपने हिन्दी जो आज हमको मिटा रहे हैं॥
जिसे फना वह समझ रहे हैं वका का है राज इसी में मजमिर।
नहीं मिटाने से मिट सकेंगे वो लाख हमको मिटा रहे हैं॥
खामोश हसरत! खामोश हसरत!! अगर हैं जजवा वतन का दिल में।
सजा को पहुँचेंगे अपनी वेशक जो आज हमको सता रहे हैं॥

(४)

पहिनाने वाले अगर बेड़ियां पहनाएंगे।
खुशी से क़ैद के गोशे को हम बसाएंगे॥
जो सन्तरी वीर जिन्दा के सो भी जाएंगे।
यह राग गाके उन्हें नींद से जगाएंगे॥
तलब फजूल है काँटे को फूल के बदले।
न लें वहिश्त भी हम होमरूल के बदले॥
सन्तरी देख कर इस जोश को शरमाएंगे।
राग जंजीर की झन्कार में हम गाएंगे॥

(५)

सितमगर अब यह आलम है तेरे बीमारे फुरक़त का।
लबों पर दम है दिल में बलबला शौके शहादत का॥
मेरी दीवानगी पर चारागर हैरां न हो इतना।
यही अञ्जाम होना चाहिये नाकाम उलफत का॥
बुताने संग दिल सुनते नहीं फरियाद बेकस की।
निराला ढंग है उन खुदपरस्तों की हकूमत का॥
मिटा कर जानों दिल अपना किसी जालिम ज़फाजूपर।
तमाशा अपनी आंखों देखता हूं अपनी किस्मत का॥
हविस हूरों की हो जिस में दिलाये याद गिल्मां की।
जनाबे शेख़ मैं कायल नहीं ऐसी रियाज़त का॥
बर आए 'हसरतें' हासिल सकूने कल्ब मुज़तर हो।
कहां ऐसा मुकद्दर हाय मुझ बरगश्ता किस्मत का॥
मज़ा जब है कि वह कह उठे 'अशफाक' उनका क्या कहना।
ग़ज़ल है या मुरक्का है तेरे वक्ते मुसीबत का॥

(६)

बहार आई है शोरिश है जनूने फितना सामां की।
इलाही खैर रखना तू मेरे जेबो–ग़िरेबां की॥
सही जजबाते उलफत भी कहीं मिटने से मिटते हैं।
अबस है धमकियाँ दारो रसन की और ज़िन्दां की॥
यह गुलशन जो कभी आज़ाद था गुज़रे जमाने में।
मैं शाखे खुश्क़ हूं हां! हां!! इसी उजड़े गुलिस्तां की॥
नहीं तुमसे शिकायत हम शफोराने चमन मुझ को।
मेरी तक़दीर ही में था क़फस और क़ैद जिन्दां की॥

जमीं दुश्मन जमां दुश्मन जो अपने थे पराये हैं ।
सुनोगे दासतां क्या तुम मेरे हाले परेशां की ।।
यही लिखा था किस्मत में चमन पैराये आलम ने ।
कि फ़स्ले गुल में गुलशन छूट कर है क़ैद जिन्दां की ।
यह झगड़े और बखेड़े मेट कर आपस में मिल जाओ ।
अबस तफरीक है तुममें यह हिन्दू और मुसलमां की ।।
सभी सामाने 'हसरत' थे मज़े से अपनी कटती थी ।
वतन के इश्क ने हमको हवा खिलवाई ज़िन्दां की ।।
वह मद लिल्लाह चमक उट्ठा सितारा मेरी किस्मत का ।
कि तक़लीदे हक़ीक़ी की सता शाहे शहीदां की ।।
इधर खोफे खिजां है आशियां का ग़म उधर दिल को ।
हमें यकसां है तफरीयें चमन और कैद ज़िन्दा की ।।
करो जब्ते मुहब्बत गर तुम्हें दावाये उलफ़त है ।
खामोशी साफ बतलाती है यह तस्वीर जानां की ।।

"क्या था"

(१)

देश दृष्टि में माता के चरणों का मैं अनुरागी था ।
देश द्रोहियों के विचार से मैं केवल दुर्भागी था ।।
माता पर मरने वालों की नज़रों में मैं एक त्यागी था ।
निरंकुशों के लिए मगर मैं, कुछ था तो बस बाग़ी था ।।

(२)

माता के बन्धन तोड़ूंगा, रखता था नित ध्यान यही ।
अथवा मातृ मानपर मर जाऊंगा था मुझको अभिमान यही ।।
चाह रहा था जीवन में मैं, फांसी का वरदान यही ।
जन्मूंगा फिर भी भारत में, होगा उर में भान यही ।।

(३)

देश-प्रेम के मतवाले कब, झुकें फांसियों के भय से।
कौन शक्तियां हटा सकीं हैं, उन वीरों को निश्चय से ।।

हो जाता है शक्तिहीन जब शासन, अतिशय अविनय से ।
लखता है जग बलिदानों को, पूर्ण विजय तब विस्मय से ।

(४)

वीर शहीदों के शोणित से, राष्ट्र महल निर्माण हुये ।
उत्पीडक वन राजकुलों के भाग्य दीप निर्माण हुये ।।

माता के चरणों पर अर्पित जिन देश के प्राण हुए ।
रहे न पल भर पराधीन फिर प्राप्त उन्हें कल्याण हुए ।।

(५)

जाता हूं, दो मातृ यही वर, भारत में फिर जन्म धरूं ।
एक नहीं तेरी स्वतन्त्रता पर, जननी मैं सौ बार मरूं ।।

राजेन्द्रनाथ "लहरी" ने यह कविता फांसी पर जाते समय गाई थी ।

हम सरे दार बसर शौक़ जो घर करते हैं ।
ऊंचा सर क़ौम का हो नज़र यह सर करते हैं ।।

सूख जाए न कहीं पौदा यह आज़ादी का ।
खून से अपने इसे इसलिये तर करते हैं ।।

इस गुलामी में तो कोई न खुशी आई नज़र ।
खुश रहो अहले वतन हम तो सफ़र करते हैं ।।

सर तन से जुदा कर दो ये है हाथ तुम्हारे ।
पर रूह से जजबाते जुदा कर नहीं सकते ।।

युवकों का जै घोष

कुछ सोच न कर ले कटती हैं सब कड़ियां तेरी गुलामी की ।
वह हमसे हो सकता ही नहीं कि सूरत देखें नक़ामी की ॥

क्या फिक्र तुझे माँ ! कैसे कटे हम नन्हें नन्हें बेचारों से ।
जग्जोर कटो जो कट सको इन बूढों के औजारों से ॥

हम जती सती हैं ऐ माता ! हम तेरा मान बढायेंगे ।
जो हम ने तुझ को वचन दिया वह पूर्ण कर दिखलायेंगे ॥

अहसासे ग़म नहीं, हमें परवाहे ग़म नहीं ।
हमने समझ लिया है, कि दुनियां में हम नहीं ॥

बुलबुल को गुल पसन्द है और गुल को बू पसन्द ।
किसी को कुछ पसन्द हो पर मुझको तू पसन्द ॥

खौफ आफ़त से कहां दिल में रिया आयेंगी ।
बात सच्ची है वह लब पै सदा आयेगी ॥
दिल से निकलेगी न मरके भी वतन की उल्फत ।
मेरी मिट्टी से भी खुशबूए वफा आयेगी ।
मैं उठा लूंगा बड़े शौक से उसको सर पर ।
खिदमते क़ौम में जो रंजो बला आयेगी ॥
सामना सब्रो शुजाअत से करूंगा मैं भी ;
खिंचिके मुझ तलक जो कभी तेग़े जफा आयेगी ॥
गर ज़ौम और खुदी से जो करेगा हमला ।
मेरी इमदाद को खुद जाते खुदा आयेगी ॥
आत्मा हूं मैं बदल डालूंगा फौरन चोला ।
क्या बिगाड़ेगी अगर मेरी कज़ा आयेगी ॥

खूब रोयेगी मेरे लाशे पै शमा बादे सफ़क़।
ग़म मनाने के लिए काली घटा आयेगी ॥

अब्रतर अश्क़ बहायेगी मेरे लाशे पर।
ख़ाक उड़ाने के लिए बादे सबा आयेगी ॥

ज़िन्दगी में तो मिलने से झिझकती है फ़लक।
ख़लक़ को याद मेरी बादे फ़ना आयेगी ॥

गजल

मत रो मां तेरे चरणों पर कर दूंगा जीवन बलिहार।
हृदय रक्त जलसे धो दूंगा बहती हुई आंसू की धार ॥

शीश चढा दूंगा मां तेरे पद कमलों पर पुष्प समान।
पद पखार दूंगा शोणित से किन्तु न होवे दूंगा म्लीन ॥

देखूं कौन देखता है अब जननी तुझको नयन तरेर।
भय के दिन अब बीत गये मां नहीं सुदिन की है अब देर ॥

कट जायेंगे तेरे बन्धन पहनेगी तू जय का हार।
मत रो मां अब शेष रहे हैं दुःख के दिन बस दो ही चार ॥

गजल

सरफरोशी की तमन्ना है तो सर पैदा करो।
दुश्मने हिन्दुस्तान के दिल में डर पैदा करो ॥

फूक दो बरबाद कर दो आशियां सैय्याद को।
शरबाजो अब ज़रा फिर से शरर पैदा करो ॥

झोंक दो दोज़ख की भट्टी में तुम इंगलिस्तान को।
जल के हो जायें खाक गोरे वह हशर पैदा करो ॥

आगे बढ करके जरा अब फोर्ड विलियम छीन लो।
लार्ड साहब के मिटाने की अक़्ल पैदा करो॥

दत्त भगतसिंह की तरह झेलो हजारों सख्तियां।
दास जैसा सख्त जनिब फिर बसर पैदा करो॥

सन् अठारह सौ सतावन का वही आगाज हो।
नौजवानों में वतन फिर से गदर पैदा करो॥

निर्वासन काले पानी से जरा न भय मानूंगा मैं।
भूखे बिना अन्न पानी रह गीत बना गाऊंगा मैं॥

फांसी पर दे चढा अरे हंसते हंसते झूलूंगा मैं।
बोटी बोटी मांस नोच ले आह नहीं बोलूंगा मैं॥

आती सन सन सन गोली को छाती से ठुकराऊंगा मैं।
'क्रान्ति विजय' 'साम्राज्यवश' यह शब्द नहीं छोड़ूंगा मैं॥

—०—

मुद्रक—आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक। फोन : 2874

अमर शहीद श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल'